राजभाषा विशेषांक

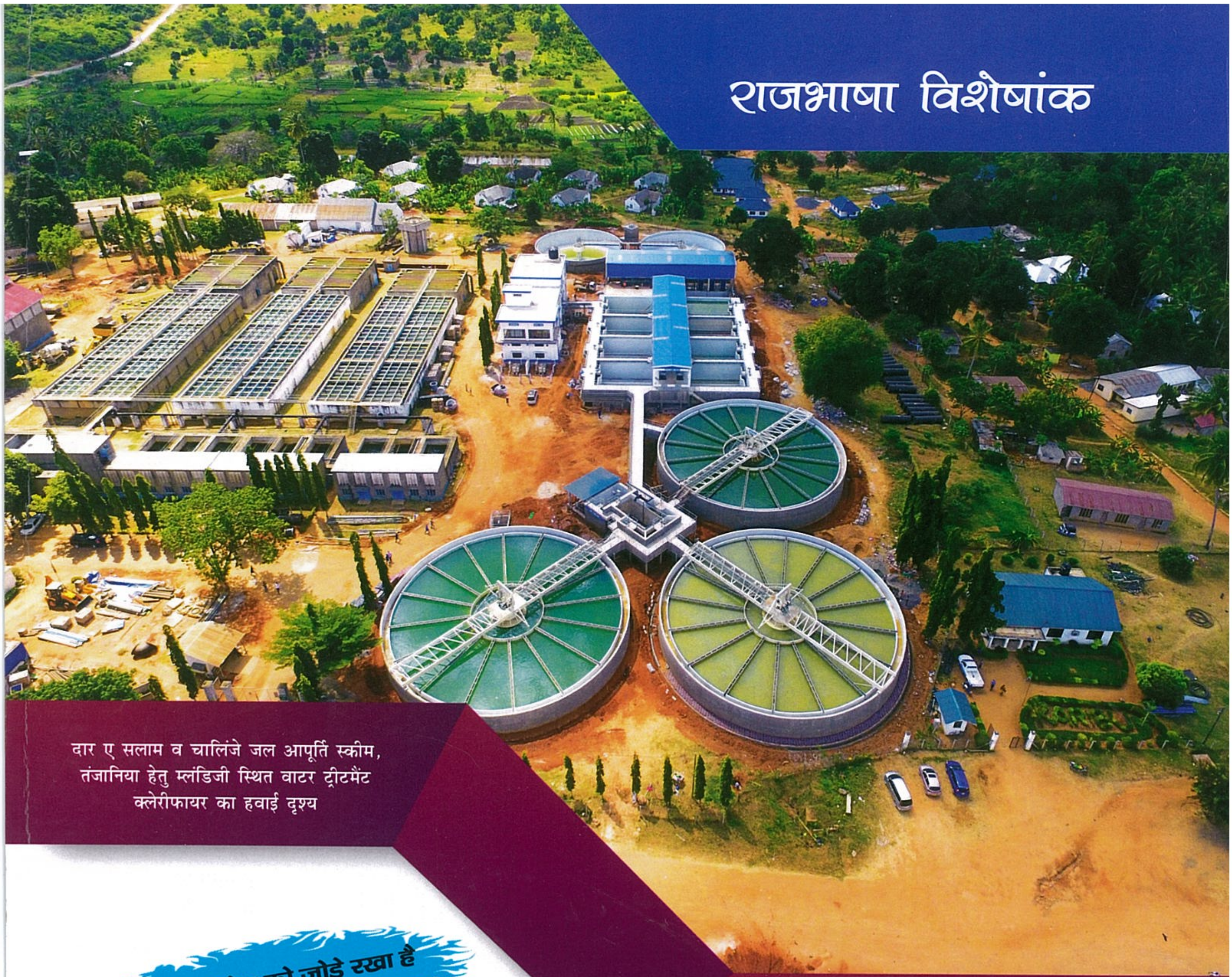

दार ए सलाम व चालिंजे जल आपूर्ति स्कीम, तंजानिया हेतु म्लांडिजी स्थित वाटर ट्रीटमेंट क्लेरीफायर का हवाई दृश्य

जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा हिन्दी है।

वाप्कोस दर्पण

त्रैमासिक गृह पत्रिका अंक-86
(जुलाई-सितम्बर, 2017)

राष्ट्रभाषा जहां है हमारी स्वतंत्रता वहां है।

मैं आपकी अपनी हूँ, सरल हूँ, सहज हूँ
हिन्दी अपनाकर तो देखिए।

हिन्दी हमारी शान है देश का अभिमान है।

हिन्दी मेरी पहचान है।

भारत माँ के भाल पर सजी स्वर्णिम बिन्दी हूँ,
मैं आपकी अपनी हिन्दी हूँ।

हिन्दी बोलने पर गर्व महसूस करें।

आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड

सन्देश

हिंदी पखवाड़े के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं। 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वाप्कोस में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 01 से 15 सितम्बर, 2017 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा से अच्छी कोई भाषा नहीं है। यह सबसे अधिक बोली व समझे जाने वाली भाषा है। राजभाषा हिंदी सरकार एवं संपूर्ण देश की आम जनता के बीच संवाद की भाषा होकर अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है। कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए यूनिकोड का प्रयोग करें और कम्प्यूटरों पर उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें।

मैं वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से आशा करता हूं कि वह हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा योजनाओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक मात्रा में प्रयोग करेंगे ताकि वाप्कोस गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2017-18 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

मुझे विश्वास है कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने कामकाज में सहज सरल हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति निष्ठा और समर्पण का पूर्ण परिचय देंगे।

हिंदी पखवाड़े के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूर्ण उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिंदी में करेंगे।

जय हिन्द।

दिनांक: 01 सितम्बर 2017

आर.के.गुप्ता
(आर.के.गुप्ता)

वाप्कोस दर्पण

जुलाई-सितम्बर, 2017 अंक-86

	इस अंक में	पृष्ठ सं0
संरक्षक	संदेश – श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार	1
आर.के.गुप्ता	संबोधन – कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	3
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	दो शब्द – वरि.महा प्रबंधक एवं सदस्य संपादन मण्डल	4
तकनीकी संपादन सलाहकार	दो शब्द – महा प्रबंधक (बांध व जलाशय) एवं तकनीकी संपादक	5
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक	सम्पादकीय – प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	6
संपादन मण्डल	राजभाषा गतिविधियां	7
अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक	वाप्कोस में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	9
एवं अध्यक्ष, विराकास	हिन्दी भाषा का वर्तमान परिदृश्य	14
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	17
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक	वाप्कोस के फील्ड कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	19
संपादक	लेख - लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल	24
निम्मी भट्ट,	लेख - विज्ञापन का महत्व	26
प्रमुख (रा.भा.का.)	कविता – बचपन	28
उप संपादक	लेख – जातिप्रथा	29
डी.के.सेठी	लेख – प्रकृति की एक अनमोल देन है ''पानी'' उसको बचाए रखना	34
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)	लेख – अमृत समान-छाछ	38
सहयोग	राजभाषा अधिनियम-1963 की विशेषताएं	40
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक	कविता – साथ-साथ एक साथ (7.7.17)	44
शारदा रानी, वरि.सहायक	लेख – हिन्दी का विकास – राजभाषा के रूप में	45
(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)	कविता – आती जाती शाम.....	48
	लेख – स्वच्छ भारत अभियान	49
	लेख – सफलता का सबक	50
	विश्वेश्वरैया पुस्तकालय ई-पुस्तकालय	52
	लेख – स्वस्थ जीयो	54
केवल आन्तरिक वितरण हेतु	आपके पत्र	56

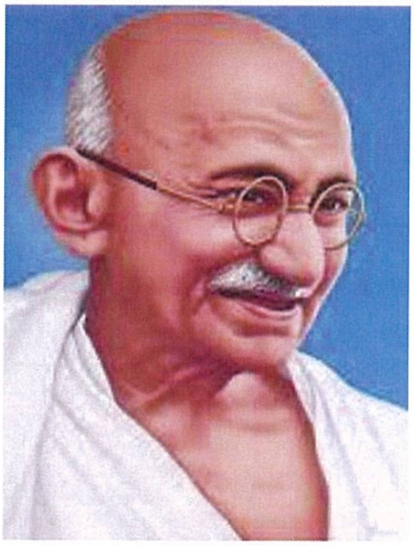

सोचकर देख लीजिए, आप दो में से कौन-सी स्थिति स्वीकार करेंगे – यह कि सभी धर्मों के अनुयायी एक-दूसरे के धर्म के प्रति सहिष्णुता का रूख अपनाकर चलें अथवा यह कि वे सभी धर्मों को समान मानें? मेरी अपनी स्थिति तो यह है कि संसार के सभी धर्म तत्वतः समान हैं। हममें अपने ही धर्म की तरह दूसरे के धर्मों के प्रति भी सहज सम्मान-भाव होना चाहिए। ध्यान रखिए – पारस्परिक सहिष्णुता नहीं बल्कि बराबर सम्मान का भाव।

- सम्पूर्ण गांधी वाड्मय (खण्ड 64), पृ0 23-24

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सब को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं !

"भाषा" मानव, समाज और देश के संगठन की अंत:शक्ति है। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए भाषा-शक्ति आधार का काम करती है। किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा का अहम योगदान होता है। भाषा सिर्फ मनोभावों की वाहिका ही नहीं होती अपितु राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन होने के साथ ही सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। किसी सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसकी अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समृद्ध है।

हमारे देश की सभी बोलियाँ और भाषाएँ हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। अपनी भाषायी धरोहर की सजग होकर रक्षा करना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है।

"हिंदी" को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। "हिंदी-भाषा" में भारत के वे विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान हैं जिनकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय हैं। भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और सरकार के मध्य जन-जन की भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका निभा सकती है। हिंदी, भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत की भावात्मक एकता को मज़बूत करने का भी सशक्त ज़रिया है। अपनी उदारता, व्यापकता एवं ग्रहणशीलता के कारण ही हिंदी भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की पूरक है। अत: संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ सरकार को यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे, ताकि हिंदी भारतीय-संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और स्वाभाविक होती है, जो अनुवाद की भाषा से कदापि संभव नहीं है। आज ज़रूरत इस बात की है कि हिंदी को इसके सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में ज़्यादा से ज़्यादा प्रयोग में लाया जाए। मैं, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों से अपील करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिल सके।

हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान ही हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है। इसलिए अपने सभी कार्मिकों को हिंदी-ज्ञान में वृद्धि करने के लिए सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों द्वारा अधिक से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी माध्यम में ही सुनिश्चित करना चाहिए। साथ ही, राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों के अनुसार कार्यालयों आदि द्वारा नियमित रूप से अभ्यास आधारित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। इस प्रकार व्यावहारिक कार्य-योजना बनाकर अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का सार्थक प्रयास करने की महती आवश्यकता है।

देशवासियो ! पिछले वर्षों से "कम्प्यूटर" और "इन्टरनेट" ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती। विगत कुछ समय से अनेक हिंदी ई-टूल्स विकसित किए गए हैं, जिससे कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अत्यन्त सरल हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा दौर में हमें विभिन्न हिंदी ई-टूल्स जैसे यूनिकोड, हिंदी की-बोर्ड, लीला सॉफ्टवेयर, मशीन अनुवाद, ई-महाशब्दकोश आदि का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

यह बात सही है कि संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है, परंतु संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व बनता है कि हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएँ। राजभाषा की कार्यशालाओं/बैठकों में शीर्ष अधिकारियों की उपस्थिति अवश्य ही होनी चाहिए तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित आँकड़े प्रस्तुत करते समय तथ्यपरकता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन तथा उत्तरोत्तर विकास के लिए राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन भी उसी दृढ़ता के साथ किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

आइए, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम एक साथ मिलकर मन, वचन और कर्म से हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक सहयोग देंगे और हिंदी को उसके सम्मानजनक स्थान पर पहुँचा कर राष्ट्र का गौरव बढ़ाएंगे । हम सब, न सिर्फ़ इसे अपना संवैधानिक दायित्व मान कर बल्कि नैतिक दायित्व समझ कर सरकारी काम-काज के साथ ही साथ अपने निजी जीवन में भी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग पूरे मनोयोग से करें।

मेरे प्रिय देशवासियो ! हमें हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल सरकारी स्तर तक सीमित न रखकर भारत के जन-जन तक ले जाना होगा। साथ ही, न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रकाश फैलाने का संकल्प लेना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हमें वांछित परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सब को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(राजनाथ सिंह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2017

संबोधन

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

वाप्कोस गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का यह ''राजभाषा विशेषांक'' आपको सौंपते हुए और इसके माध्यम से अपने विचार प्रेषित करते हुए मैं अत्यंत हर्ष एवं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

हिन्दी भारत की राजभाषा ही नहीं अपितु आम जनता के बीच संवाद करने के लिए सम्पर्क भाषा भी है। हिन्दी देश की भावनात्मक एकता की कड़ी है। आधुनिक युग में हिन्दी ने अपने महत्व, उपयोगिता और लोकप्रियता के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी के प्रयोग के बिना भारत में कोई भी व्यवसाय फल-फूल नहीं सकता। आज हमारे कम्प्यूटर बिना किसी कठिनाई के हिन्दी में काम करने में पूरी तरह से सक्षम हैं। हिन्दी को आगे बढ़ाने में मीडिया ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वाप्कोस में 1 से 15 सितम्बर, 2017 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया गया। इस दौरान सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कार्मिकों के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं व प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन कार्यक्रमों में कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करेंगे। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए अपितु पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपने दायित्वों को निभा सकें।

इस अवसर पर हम सब हिन्दी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों को समझते हुए संकल्प लें कि अपना कार्यालय का कामकाज यथासंभव हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में अपना सहयोग करेंगे।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दो शब्द

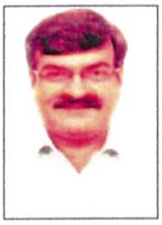

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

राजभाषा हिन्दी का सफर निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ रहा है। यह सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए जन मानस की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनी है। हमारा देश एक बहु-भाषी देश है और भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है।

राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने सरकारी कामकाज में अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। कम्प्यूटरों पर यूनिकोड समर्थित फोन्टस् के माध्यम से हिन्दी में आसानी से काम किया जा सकता है। इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में आप अपना योगदान दें ताकि उपलब्ध कराई गई ये सुविधाएं सार्थक हो सकें।

आज का युग ग्लोबलाइजेशन का युग है। तकनीकी क्षेत्र में रोज नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं, नई-नई तकनीक आ रही हैं। हमें इन्हीं नवीनतम तकनीकों और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कार्य करते हुए अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ना है। आज तकनीकी प्रभागों में तकनीकी कार्य हिन्दी में करने में निरंतर वृद्धि हो रही है।

आज हम प्रण करें कि अपना कार्यालय का अधिकतम कार्य हिन्दी में करेंगे और राजभाषा के विकास में अपना योगदान देंगे।

(डा0 आर.पी.दूबे)
वरि.महा प्रबंधक (पत्तन एवं बंदरगाह)
एवं सदस्य, संपादन मण्डल
'वाप्कोस दर्पण'

दो शब्द

14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से यह दिन हमारे देश में 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी किसी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है। यह अधिकांश लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है। हिन्दी बहुत सरल व उदार भाषा है। हिन्दी को सुगम बनाने के लिए अनेक इलैक्ट्रोनिक यांत्रिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। अतः यह जरूरी है कि हम आधुनिक उपकरणों के उपयोग से हिन्दी में अपना कार्यालय का कार्य बढ़ाने में अपना योगदान दें।

आर्थिक व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्याधिक प्रतिस्पर्धा है। इसलिए इसमें आगे बढ़ने व टिके रहने के लिए हमें अपने मानवीय संसाधनों का अनुकूलतम व सर्वोत्तम उपयोग करना होगा।

आइए, हम स्वयं हिन्दी में कार्य करने की पहल करते हुए तकनीकी दायित्वों के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दें।

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अमिताभ त्रिपाठी)
महा प्रबंधक (बांध व जलाशय)
एवं तकनीकी संपादक/सदस्य,
संपादन मण्डल 'वाप्कोस दर्पण'

संपादकीय

'हिन्दी दिवस' के इस शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

'राजभाषा विशेषांक' के रूप में गृह पत्रिका का यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। भले ही यह यात्रा लम्बी रही परन्तु निश्चय ही राजभाषा पत्रिका की आगामी यात्रा सोद्देश्य व फलदायी होगी। हमें राजभाषा का प्रसार प्रेरणा व प्रोत्साहन के माध्यम से व्यापक व जनोपयोगी बनाना है।

हिन्दी, भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि भारत की भावात्मक एकता को मजबूत करने का भी सशक्त जरिया है। हिन्दी भाषा ने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले कुछ वर्षों से ''कम्प्यूटर'' और ''इन्टरनेट'' ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। आज हर व्यक्ति इनका प्रयोग बढ़ चढ़कर, कर रहा है।

वाप्कोस में राजभाषा हिन्दी के सफल कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति संबंधी प्रावधानों का समुचित अनुपालन किया जाता है। वाप्कोस में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के मार्गदर्शन में 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया गया। इस दौरान कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

आज प्रतिस्पर्धा का युग है और हमें इसमें आगे बढ़ने व टिके रहने के लिए अपने मानवीय संसाधनों का अनुकूलतम व सर्वोत्तम उपयोग करना होगा। आज हिन्दी भाषा इतनी सक्षम है कि कम्प्यूटर, विज्ञान, तकनीकी व चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में कार्य करना आसान हो गया है। आइए, **हम स्वयं कार्यालय का कार्य हिन्दी में करने की पहल करते हुए राजभाषा के प्रसार में अपना सहयोग दें।**

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गुड़गांव की छमाही बैठक श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 25.07.2017 को वाप्कोस कार्यालय में आयोजित की गई** जिसमें नराकास, गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में वाप्कोस के श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति भी उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा को भी आमंत्रित किया गया था।

- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कठिनाईयों को समझने, उनसे संबंधित विशेष मुद्दों को जानने तथा उनके निराकरण करने के उद्देश्य से माननीय गृह राज्यमंत्री, राजभाषा विभाग की उपस्थिति में सार्वजनिक

क्षेत्र के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशकों/उपक्रमों के शीर्षस्थ अधिकारियों के साथ दिनांक 18.9.2017 को एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, पालिका केन्द्र, सभागार, नई दिल्ली में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष विराकास, श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) तथा श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) द्वारा भाग लिया गया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 19.09.2017 को संयुक्त सचिव (पीपी) एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक, (रा.भा.) द्वारा दिनांक 28.09.2017 को वाप्कोस के गुड़गांव स्थित योजना एवं विकास प्रभाग (प्रशासन) का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा दिनांक 18.8.2017 को जोधपुर, राजस्थान में आयोजित तकनीकी संगोष्ठी में वाप्कोस से श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा भाग लिया गया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

हिन्दी का मान करें हम हिन्दी का सम्मान करें,
हर दिन होगा 'हिन्दी दिवस' गर राजभाषा में हम काम करें।

हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, जो पूरी करती हमारी आशा
इसे सीखना बहुत सरल है, इसलिए यह है राजभाषा ।
फिर भी न जाने क्यों अब तक, अँग्रेज़ी का खेल-तमाशा
हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा ।

वाप्कोस में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के मार्गदर्शन में दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-

- हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
- चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
- राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
- श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह ''घ'' कर्मचारियों के लिए)

  उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से भी अधिकारियों को मार्गदर्शन के लिए बुलाया गया।

- हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-
  - विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
  - हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।
- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक **''सन्देश''** भी जारी किया गया।
- दिनांक 6.9.2017 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) से श्री पी.के.शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) को आमंत्रित किया गया था जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी।
- दिनांक 8.9.2017 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा
चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
हिन्दी पखवाड़ा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2017)
हिन्दी कार्यशाला
दिनांक : 06.09.2017
वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
हिन्दी पखवाड़े के दौरान
आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़ा
श्रुतलेख प्रतियोगिता
दिनांक : 04.09.2017
श्रुतलेख प्रतियोगिता
दिनांक : 04.09.2017
भारतीय परियोजनाएं
INDIAN PROJECTS
हिन्दी पखवा
(01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 20
हिन्दी निबन्ध प्रतियोगि
विषय : हिन्दी भाषा का वर्तमान परि
दिनांक : 01.09.2017
वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED

''हिन्दी भाषा का वर्तमान परिदृश्य''

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

कलावती रावत
वरि.अभियंता, सिविल डिजाइन

भाषा एक अति आवश्यक माध्यम है किसी भी समुदाय में अपने विचारों का आदान प्रदान करने का, फिर चाहें वह मनुष्य जाति हो या फिर जानवर, पशु-पक्षी इत्यादि। सभी किसी न किसी तरीके से अपने विचारों को एक दूसरे के साथ बांटते हैं तथा समझते हैं। भाषा ऐसी होनी चाहिए जो आसान हो तथा देश में अधिकाधिक बोली जाती हो, और ऐसी ही भाषा है हमारी ''हिन्दी''।

''हिन्दी भाषा भारत की संस्कृति एवं सौहार्द की द्योतक है।''

प्राचीन काल में संस्कृत प्रयोग में आती थी पर जैसे-जैसे समय बीतता गया भाषा का रूप बदलता गया। वह अपने में, अन्य कई भाषाओं को एक नदी की तरह समन्वय करती चली गई। हिन्दी ही देश में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में उभर कर सामने आई। उसके रूप भले ही जगह-जगह के बदलने पर बदलते रहे पर मूल निहित रहा है।

भारत वर्ष अंग्रेजों का गुलाम रहा। काफी संघर्षों के बाद भारत को आजादी मिली तथा एक स्वतंत्र देश के रूप में सक्षम हुआ। हिन्दी भाषा अपने में सभी प्रकार से सक्षम है परन्तु धीरे-धीरे समय के साथ यह प्रभावित हुई। आजादी के बाद भारतीय संविधान द्वारा वर्ष 1949 में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया तथा इसके उचित प्रचार एवं प्रसार के लिए अधिकाधिक प्रयास किए जाएं पर यह काफी आश्चर्य की बात है जिस देश के इतिहास में हिन्दी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी आज उसे ही अपने अस्तित्व को ढूंढने में संघर्ष करना पड़ रहा है। इसका मुख्य कारण है हमारी मानसिकता।

हिन्दी के प्रति उदासीन एवं तुच्छ मानसिकता

वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी अपने अस्तित्व को पाने में जूझती नजर आती है। इसका मुख्य कारण हमारी उदासीनता एवं तुच्छ मानसिकता है। इस विषय को हम इस

उदाहरण से समझ सकते हैं कि जब भी हम किसी व्यक्ति को पहली बार मिलते हैं और यह देखते हैं कि वह अंग्रेजी बड़ी ही निपुणता से बोल रहा है तो हम हिन्दी भाषी व्यक्ति को कम तर आंकते हैं तथा उसे गंवार तक कहने में भी नहीं हिचकिचाते। इसी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है और सभी के प्रयासों से यह संभव है।

हिन्दी विश्व में तीसरे स्थान पर (चीन प्रथम तथा अंग्रेजी द्वितीय) सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हैं। विश्व स्तर पर इसे अब पहचान मिल रही है। हिन्दी भाषा भारत की संस्कृति की संवाहिका है। 1980 से 1990 के दशक में औद्योगिकीकरण, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति ने अन्य देशों को बाध्य किया हिन्दी को जानने के लिए। वर्तमान समय में हिन्दी, अपने अस्तित्व के संघर्ष से बढ़कर अपनी मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर है। इसके कारण निम्नलिखित हैं:-

1) **वैश्वीकरण एवं व्यवसाय क्षेत्र** :- किसी भी कम्पनी को अपना व्यवसाय बढाने के लिए अन्य देशों में भी प्रसार व व्यवसाय बढाना पड़ता है। भारत उनके लिए अवसरों से भरा है। यहां पर उन्हें अपने व्यवसाय को जमाने के लिए हिन्दी भाषा को माध्यम बनाने के लिए विवश होना पड़ा है क्योंकि हिन्दी सबसे ज्यादा बोली तथा समझी जाने वाली भाषा है।

2) **टेक्नॉलाजी के साथ कदम से कदम मिलाना** :- समय के साथ-साथ किसी भी कार्य को करने के तरीके तथा स्वभाव में परिवर्तन आया है फिर चाहे वह मीडिया हो, टेलीविजन हो या फिर सोशल मीडिया। जिस प्रकार से टेक्नॉलाजी बदलती गई उसी प्रकार हिन्दी भी उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलती गई। हिन्दखोज, वेबदुनिया और हिन्दी में विकिपीडिया ये सभी हिन्दी के जीवंत उदाहरण हैं जोकि किसी भी प्रकार से अछूती नहीं रही। भले ही इसका स्वरूप बदला हो परन्तु इसका मूल निहित ही रहा।

3) **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान** :- आज देश विदेश के लोग भी भारत की संस्कृति एवं इतिहास को जानना चाहते हैं। यहां के योग, आयुर्वेद, संस्कृति को जानने का माध्यम केवल एक ही है और वो है ''हिन्दी''। देश विदेश में भी हिन्दी विषय पढ़ाए जा रहे हैं तथा विदेशी भी हिन्दी को सीखने के लिए इच्छुक हैं ताकि यहां की संस्कृति में निहित ज्ञान को प्राप्त किया जा सके।

हिन्दी भाषा के सामने चाहे कितनी भी चुनौतियां रही हों पर वर्तमान समय में वह प्रगति एवं अपने सुदृढ़ अस्तित्व की ओर अग्रसर हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तो पहचान बनी है

परन्तु आज भी अपने ही देश में अपने प्रति उदासीनता की मानसिकता को झेल रही है। इस मानसिकता को बदल कर हमें हिन्दी पर गर्व करना चाहिए भले ही इसमें कई अन्य भाषाओं का समन्वय रहा हो, परन्तु देश की राजभाषा ''हिन्दी'' का सम्मान एवं उसके प्रति गर्व की भावना हृदय से होनी चाहिए । अंत में इन्ही पक्तियों द्वारा विराम देना चाहूंगी -

''भले ही हिन्दी अंग्रेजी में सर्व कीजिए,
पर हिन्दी भाषा पर गर्व कीजिए''।

******

व्यक्तित्व विकास पर युक्तियां

बी. रमेश
वरि.अभियंता, संभलपुर, ओडिशा

हम रोजाना बहुत से लोगों से मिलते हैं पर कुछ एक लोग ऐसे होते हैं जो हमें प्रभावित करते हैं केवल अपने व्यक्तित्व के कारण। व्यक्तित्व विकास के लिए निम्नलिखित युक्तियां अपनाएं और प्रभाव देखें :-

1. मुस्कुराहट के साथ मिलिए।
2. बात करने वाले व्यक्ति के नाम का अवश्य रखें ध्यान
3. 'मैं' से पहले 'तुम' को रखिए
4. बोलने से पहले सुनिए
5. क्या कहना है से भी जरूरी है कैसे कहना है
6. अपना फायदा सोचे बिना, लोगों की मदद कीजिए
7. यह सोचें कि सामने वाले की कैसे प्रशंसा कर सकते हैं
8. लगातार अपने को जांचे और सुधार करते रहें।

आप भी अवश्य ही अपने व्यक्तित्व से दूसरे को प्रभावित करेंगे।

******

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

कु. पल्लवी पाण्डे
सहायक प्रबंधक (सि.डि.)

इस चित्र को देखते ही जहन में सबसे पहले यही आया :- ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

हमारे भारत देश में हम समानता की बात करें तो नारियों और पुरूषों में एक बड़ी लम्बी रेखा देखी जा सकती है। हमारे देश में पुरूषों को सदा ही उच्च पद पर रखा गया है। जहां मां दुर्गा, मां सरस्वती इत्यादि देवियों को पूजा जाता है, वहीं घर की महिलाओं को पीड़ित किया जाता है। कोख में पुत्री होने पर भ्रूण हत्या जैसा पाप भी करने में लोग संकोच नहीं करते।

एक ही घर में पुत्र को घर का चिराग और पुत्री को बोझ समझा जाता है। जहां पुत्र को उच्च शिक्षा देना महत्वपूर्ण होता है वहीं पुत्री को बंदिशों में जकड़ कर रखना हमारी परम्परा हो गई है।

सरकार द्वारा उठाए गए कई कठिन नियमों द्वारा बेटियों की भूतपूर्व कठिन समस्याओं में परिवर्तन तथा इन्हें उन समस्याओं से निवारण दिलाया गया है:-

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं''। भ्रूण हत्या से रोक/बेटियों की उन्नति के लिए आर्थिक सहयोग तथा सरकार द्वारा दी गई कई प्रकार की सहायता, नारी शक्ति बढ़ाने में सहायक साबित हुई है।

हरियाणा, राजस्थान तथा राष्ट्र के कई ऐसे राज्य जहां महिलाओं की गणना का अनुपात दिन प्रति दिन घटता जा रहा था। वहीं पर सरकार अब जागरूकता बढ़ाकर पुरूषों एवं महिलाओं को एक समान एक ही स्तर पर देखने का नजरिया प्रदान करती है।

आज हर महिला के जहन में ये प्रश्न अवश्य होगा कि :-

''मां चाहिए, पत्नी चाहिए, रक्षा बन्धन के दिन राखी बांधने के लिए बहन भी चाहिए–फिर घर के आंगन में अपनी किलकारियों से खुशी फैलाने वाली बेटी क्यों नहीं''।

''जो लोग बेटी को बोझ समझते हैं वो अपने पुत्रों के विवाह के समय अपने पुत्र की बोली लगाने में संकोच क्यों नहीं करते''।

बेटी बोझ सिर्फ तब तक है जब तक लोग अपने बेटों को बेचना* बंद कर देंगे।
(* शादी में मुंह खोलकर दहेज की मांग करना)

बस अंत में ऐसे लोगों से इन पंक्तियों द्वारा यही कहना चाहूंगी कि :-

''भ्रूण हत्या कर तूने अपने अंश को मिटा दिया है,
क्या लगता है ऐसा कर, तूने अपना कल बचा लिया है।''

''घर में कर हिंसा, तू वीर बना है,
ऐसा कर, मां लक्ष्मी को घर से तूने ही दूर किया है।''

''घर की लक्ष्मी सिर्फ लक्ष्मी ही नहीं है अन्नपूर्णा भी है
ऐसा कर लक्ष्मी संग तूने अन्नपूर्णा को भी रूष्ट किया है।''

''जब तेरे घर का दीपक दुत्कारेगा, तब अपनी नन्हीं परी का लाड़ तुझे याद आएगा।''

''गर घर की नारी को शिक्षा से दूर करेगा, पढ़ा-लिखा परिवार तेरा अनपढ़ ही रहेगा।''

''नारी का सम्मान कर, कर लक्ष्मी का घर में स्वागत,
बेटी को सुखी रख कर, अपना जीवन सहज-संवार।''

****

वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 के दौरान आयोजित 'हिन्दी दिवस'/'हिन्दी पखवाड़े' की रिपोर्ट एवं झलकियां

गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस के गांधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2017 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान 14.09.2017 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस दिन विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रबंधक ने की और सभी कार्मिकों से कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने तथा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्मिकों से सहयोग प्रदान करने के लिए आग्रह किया। इस दौरान वरिष्ठ अभियंता श्री रजनीकांत पटेल ने भी कार्यालय में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने व उसका महत्व समझाया। श्री पटेल ने इस पर विशेष जोर दिया कि सभी कार्मिक कार्यालय में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। अंत में अध्यक्ष महोदय ने कार्यालय में सामान्य ज्ञान व गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन करने का प्रस्ताव रखा तथा सभी कार्मिकों ने स्वागत किया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी में किए गए कार्यों की सराहना की तथा हिन्दी दिवस मनाने के लिए सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी।

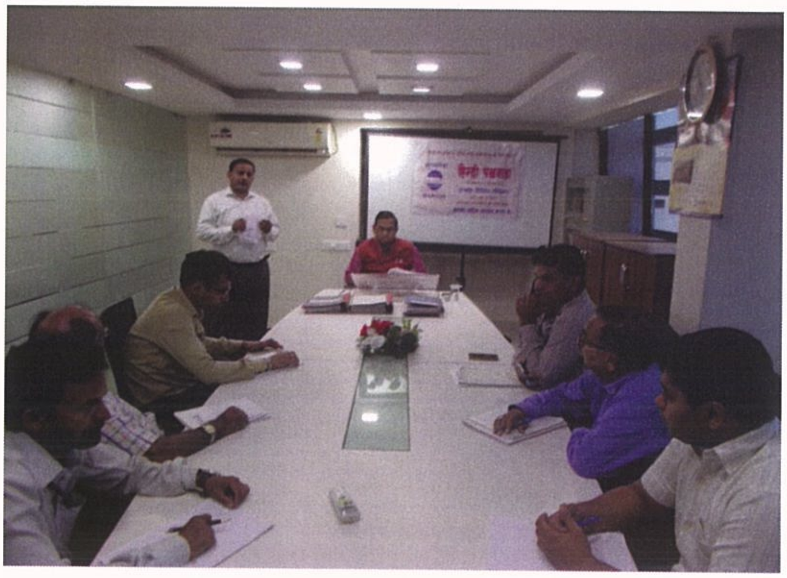

अहमदाबाद कार्यालय

वाप्कोस के अहमदाबाद कार्यालय में दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 15.09.2017 को कार्यालय में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें दो विषय दिए गए- ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं'' एवं ''स्वच्छ भारत अभियान''। इन दोनों ही विषयों पर अधिकारियों व कर्मचारियों ने अपने-अपने विचार बहुत ही सुन्दर रूप में व्यक्त किये।

भोपाल कार्यालय

वाप्कोस के मध्य क्षेत्र कार्यालय भोपाल में दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध प्रतियोगिता, कविता लेखन प्रतियोगिता, शीघ्र भाषण और तकनीकी शब्दावली का भी आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2017 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय में हिन्दी भाषा पर व्याख्यान आदि भी दिए गए। इस कार्यक्रम में सभी कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ बढ़-चढ कर हिस्सा लिया। इसके साथ ही कार्यक्रम में ''इतनी शक्ति हमें देना दाता'' एवं ''हम होंगे कामयाब'' गीत भी गाए गए।

बैंगलूरू कार्यालय

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2017 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2017 को **'हिन्दी दिवस'** मनाया गया तथा हिन्दी कार्यशाला व विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का भी आयोजन किया गया जिसमें परियोजना निदेशक द्वारा राष्ट्रभाषा का महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी दी और कार्यालय के कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के इस्तेमाल करने का अनुरोध किया। कार्मिकों ने कार्यालय के विविध विषयों के संबंध में हिन्दी में वार्तालाप व टिप्पणी आदि का अभ्यास किया और रोज ज्यादा से ज्यादा कार्यालय का कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लिया।

कोलकाता कार्यालय

वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने और उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 01.09.2017 से 15.09.2017 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में श्रुतलेख, शब्दावली, शुद्ध लेख एवं शुद्ध वाचन, निबंध एवं घोष वाक्य आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान 14 सितम्बर, 2017 **'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया गया तथा इस दिन तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सभी

अभियंताओं ने अपने-अपने कार्यों से संबंधित विषयों पर एक तकनीकी भाषण दिया जिससे अन्य कर्मचारियों को कामकाज के तकनीकी पक्ष के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

<u>हैदराबाद कार्यालय</u>

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान डा0 एस.वी.एन.राव, परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने हिन्दी का महत्व, हमारे दैनिक कार्य और जीवन में हिन्दी का उपयोग तथा हिन्दी दिवस की विशिष्टता के बारे में अमूल्य ब्याख्यान दिया। इस दौरान सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता तथा हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपने-अपने विचार हिन्दी में प्रस्तुत किए तथा विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए।

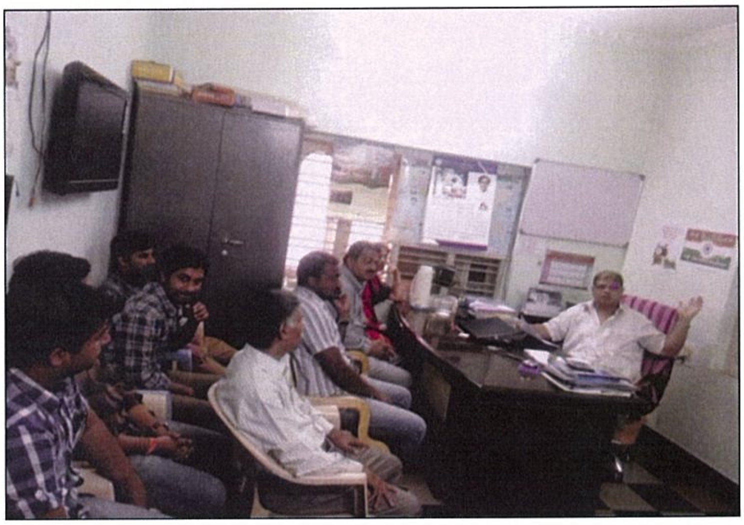

चण्डीगढ़ कार्यालय

वाप्कोस के चण्डीगढ़ कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2017 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक द्वारा दिए गए संदेश को कार्यालय में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित किया गया। पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों को कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित जानकारी दी गई तथा हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए उन्हें हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया ।

******

सरदार वल्लभभाई पटेल

''हिन्दी का पाट महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषाएं अपना बहुमूल्य भाग ले सकें। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की और न किसी जाति की है। वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें''।

“लौह पुरूष” सरदार वल्लभभाई पटेल

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

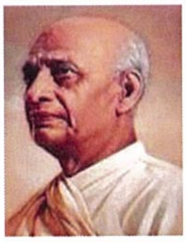

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में हुआ था। पटेल ने मुख्य रूप से शिक्षा स्वाध्याय से ही प्राप्त की। बाद में उन्होंने लंदन से बैरिस्टरी की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। सरदार वल्लभभाई पटेल को हम 'लौह पुरूष', 'सरदार', 'भारत के बिस्मार्क', 'बिना एक बूंद गिराए राष्ट्र को एक करने वाले' ना जाने कितने उपनामों से जानते हैं।

भारत के इतिहास में ऐसे कई महान व्यक्तियों के योगदान से राष्ट्र का निर्माण होता रहा है परन्तु पटेल ने आधुनिक भारत के निर्माण के लिए जो कार्य किया और नींव रखी, उसके बिना आज के भारतवर्ष का निर्माण असंभव था। पटेल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पूरे उत्साह से भाग लिया और इससे मिली आजादी और बाद में देश की सरकार में मंत्री होकर जो निर्णय लिये उसी से एक मजबूत और सशक्त भारतवर्ष का निर्माण हुआ।

सरदार पटेल महात्मा गांधी के काफी करीब थे जिसका प्रभाव गांधीजी के निर्णयों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। पटेल ने गांधीजी के विचारों से प्रेरित और प्रभावित होकर सूटबूट पहनना छोड़ धोती कुर्ता पहनना शुरू कर दिया था। महात्मा गांधी के साथ जेल में रहने के दौरान सरदार पटेल ने उनकी खूब सेवा की, सेवा से खुश होकर महात्मा गांधी ने कहा कि पटेल ने जेल में मेरी जो सेवा की उसे देख कर मुझे अपनी 'मां' की याद आ गई। कहते हैं कि गांधीजी कागज बरबाद नहीं करना चाहते थे और पटेल को पुराने कागजातों से लिफाफे बनाने में महारत हासिल थी। अत: ऐसे रिश्तों ने आपसी संबंधों को मधुर और मजबूत किया। महात्मा गांधी के डांडी मार्च में पटेल ने उनका पूरा सहयोग दिया और इस मार्च के दौरान रास गांव में उन्हें बंदी बना लिया गया और यह पटेल की पहली राजनीतिक गिरफ्तारी थी।

सरदार पटेल 1931 में कांग्रेस के अध्यक्ष बने और राजनीतिक पटल पर यह उनकी एक बहुत बड़ी पहचान बन गई। इस प्रकार वह राष्ट्र के प्रथम पंक्ति के नेताओं की जमात में

शामिल हो गए। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सबसे पहला संघर्ष गुजरात के खेडा में किया जहां अंग्रेजी सरकार भारी कर ले रही थी, भंयकर सूखे के कारण किसान अंग्रेजी सरकार से कर में छूट देने की मांग कर रहे थे। इसके लिए किसान आंदोलन का नेतृत्व गांधीजी, सरदार पटेल व अन्य लोगों ने किया। आखिर में अंग्रेजी हुकूमत को झुकना पडा और करों में राहत दी गई। सरदार पटेल की यह पहली बड़ी सफलता थी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इस आंदोलन में। यह कोई छोटी-मोटी सफलता नहीं थी क्योंकि इसी घटना ने अंग्रेजों के खिलाफ होने वाले संघर्ष में एक नई जान फूंक दी थी।

अंग्रेज भारत को एकजुट नहीं चाहते थे। वे भारत को इतने टुकड़ों में बांट देना चाहते थे कि भारत का अस्तित्व ही न बचे। लार्ड लुई माउण्टबैटन ने उस समय के रजवाड़ों के सामने एक प्रस्ताव रखा कि वे अगर भारत और पाकिस्तान में विलय नहीं चाहते तो अपने को स्वतंत्र रख सकते हैं परन्तु पटेल को यह मान्य नहीं था। अटल इरादों वाले सरदार पटेल ने एक अखंड भारत का सपना देखा और इन रजवाड़ों को भारत में विलय के लिए काम करना आरंभ कर दिया और सफलता प्राप्त की। इस तरह पटेल ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए पूरे भारत को एक कर लिया।

सरदार पटेल का पांच सौ से अधिक छोटे-मोटे रजवाडों को मिलाकर देश की एकता में योगदान अविस्मरणीय है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। इस तरह पटेल का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने से लेकर राष्ट्र निर्माण के लिए रखी गई कई नींवों तक फैला हुआ है। इन्हें देखते हुए यदि यह कहा जाए कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी दूरदर्शिता, अनुभव, राजनीतिक सूझबूझ, मजबूत इरादों और साहस के कारण इन छोटे-छोटे भूखण्डों में बटे रजवाड़ों को एक कर भारत को एक राष्ट्र के सूत्र में पिरोया तो यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

महाजननायक लौह पुरूष की सन 1950 में मृत्यु हो गई जोकि देश के लिए एक बहुत बड़ी क्षति थी। सारा देश उनकी मृत्यु से दुखी और गमगीन हो गया। ऐसा लगा कि यह जननायक कुछ वर्ष और जीवित रहता तो नि:संदेह बहुत सारी समस्याएें सामने नहीं आती और हमें और अधिक मजबूत व सुद्दढ भारतवर्ष मिलता।

*****

कष्ट और विपत्ति मनुष्य के लिए शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

विज्ञापन का महत्व

राकेश श्रीवास्तव
अपर मुख्य अभियंता
लखनऊ कार्यालय

मनुष्य समाज में रहकर अपना जीवन-यापन करता है, उसका प्रत्येक क्रिया कलाप समाज के योगदान से ही सम्पन्न होता है। समाज का विकास विभिन्न आयामों में होता है। सामाजिक विकास की भूमिका एक ऐसा संवाहक है जो समाज को अपने रचनात्मक और स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है। विज्ञापनों को विभिन्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। जैसे- व्यवसायिक विज्ञापन, छवि निर्धारित करने वाले विज्ञापन, जनहित में जारी विज्ञापन आदि। जनजागरुकता को ध्यान में रखते हुये भी बहुत से विज्ञापनों का निर्माण किया जाता है। यह विज्ञापन सामाजिक विकास की राह में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

विज्ञापन का प्रभाव चारों और दिखाई देता है इसलिए चाहकर भी इसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। विज्ञापन उपभोक्ता और उत्पादकता के बीच का वह सेतु है जिसके बिना बाजार की संकल्पना नहीं की जा सकती। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी बाजार में अपनी पैठ बनाने के लिए विज्ञापनों का ही सहारा लेती हैं। शहरी जनता के साथ-साथ ग्रामीणों को भी अपना ग्राहक बनाने के लिए विज्ञापन का सहारा लिया जाता है। सामाजिक परिवर्तन की दिशा में विज्ञापन के महत्व को आर्थिक उत्प्रेरक के रूप में देखा जा सकता है।

विज्ञापन आर्थिक उद्देश्यों की ही पूर्ति नहीं करते वरन् सामाजिक चेतना पैदा करने की जिम्मेदारी का भी निर्वहन करते हैं। उदाहरणार्थ भारत को स्वच्छ बनाने के लक्ष्य के साथ नई दिल्ली के राजघाट से **"स्वच्छ भारत अभियान"** की शुरुआत हुई। इस मुहिम को आगे बढ़ाने तथा जन-जन तक पहुँचाने में विज्ञापन का बहुत बड़ा हाथ रहा है। **मिलेनियम स्टार अमिताभ बच्चन** जब इसका विज्ञापन देते है तो आम जनता भी यह समझ गई कि हमें भी इस आन्दोलन से जुड़कर इसे सफल बनाना है। इसी प्रकार सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य योजनाएं जैसे सुकन्या समृद्धि योजना, बालिकाओं को

सशक्त बनाने के लिए किए जा रहे समन्वित प्रयासों के तहत नारा दिया गया **"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ"** आदि बहुत सी ऐसी योजनाएं है जो विज्ञापन के माध्यम से जन-जन तक पहुँची और जन कल्याण का सशक्त माध्यम बनी। बेरोजगारी अशिक्षा भूख आदि को मिटाने के लिए जनता के उपयोग हेतु सूचनाओं को सही समय से सही लोगों तक पहुंचाने के लिये विज्ञापन अत्यधिक जरूरी है।

विज्ञापन सामाजिक चेतना का आवश्यक अंग बनकर स्वस्थ्य दृष्टिकोण से युक्त हो। एकता और उन्नति के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। अतः विज्ञापन के महत्व को निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से पंक्तिबद्ध किया जा सकता है।

जब तक जीव है जगत में,
जब तक जग में पानी
सुनो रे मेरे भाई बन्धु,
खत्म न होगी विज्ञापन की कहानी।

****

आप राजभाषा के विकास में निम्नानुसार सहयोग कर सकते हैं

- ❖ उपस्थिति पंजिका में हस्ताक्षर हिन्दी में करके।
- ❖ सभी प्रकार की छुट्टियों का आवेदन हिन्दी में भर कर।
- ❖ डाक रजिस्टर में प्रविष्टियां हिन्दी में करके।
- ❖ लिफाफों पर पते हिन्दी में या द्विभाषी में लिख कर।
- ❖ फाइलों, रजिस्टरों, फोल्डरों आदि पर विषय हिन्दी में लिख कर।
- ❖ फाइलों पर टिप्पणी हिन्दी में लिख कर।
- ❖ सभी कार्यालयीन दस्तावेजों पर हिन्दी में हस्ताक्षर करके।
- ❖ हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में देकर।
- ❖ धारा 3(3) के अंतर्गत सभी पत्राचार द्विभाषी में जारी करके।
- ❖ सभी फार्मों का द्विभाषी रूप में ही प्रयोग करके।

******

बचपन

विमल किशोर, प्रारूपकार
जल संसाधन विकास

आँगन में बस झूमता,
खेलता, उमंगता बचपन।
पल-पल में जब गिरता,
उठता, संभलता बचपन।
सोता बचपन, रोता बचपन,
हँसता बचपन, कहता बचपन।
जानें क्यूँ लगता है कभी,
जानें क्यूँ बीता बचपन।

हँस कर खेला, रो कर खेला,
लड़ कर खेला, मिल कर खेला,
इक ही पल में रूठ गये,
फिर मान गये फिर से खेला।
कभी गलियों में, कभी गोद में,
आमोद में, प्रमोद में।
हर बार वही भोलेपन से,
इस जीवन से खेला बचपन,
जानें क्यूँ लगता है कभी,
जानें क्यूँ बीता बचपन।

कभी दादी संग, कभी दादा संग,
कभी नानी संग बीता बचपन।
कभी चिड़ियों, कभी कबूतरों से,
कभी खुद से ही सीखा बचपन।
बड़ी उमंग, बड़ी तरंग,
बड़े आनंद से, बढ़ता बचपन।
जानें क्यूँ लगता है कभी,
जानें क्यूँ बीता बचपन।

ना याद ही था, ना भूल सके,
क्या खोया था और क्या पाया।
ना नज़र ही थी, ना फ़िकर ही थी,
यहाँ कौन गया और कौन आया।
क्या हो चुका, क्या होगा कल,
ना सोचे, ना ही जाने बचपन।
अलमस्त हवा की मस्ती सा,
जब टोको, ना माने बचपन।
खिलता बचपन, महकता बचपन,
निखरता बचपन, सँवरता बचपन।
जानें क्यूँ लगता है कभी,
जानें क्यूँ बीता बचपन।

अब काल-समय की फ़िक्र सदा,
कहाँ वक़्त यहाँ अटखेली का?
भागो-पहुँचो अब मंज़िल पर,
कब मज़ा-फिज़ा अलबेली का?
गई मौज-सहर, मिली फ़िक्र-फ़िक्र।
बस जब से है बीता बचपन,
खट्टा और मीठा समझ गये,
था खट्टा या मीठा बचपन?
बहता बचपन, उड़ता बचपन,
हरमन बचपन, जीवन बचपन।
जानें क्यूँ लगता है कभी,
जानें क्यूँ बीता बचपन।

*****

जातिप्रथा – 2

(भगवान ने भी किया सामना)

पिछले अंक में मनुष्य के अफ्रीका से उद्गम तथा उसकी अग्निपूजा जैसे धार्मिक कर्मकांड का अफ्रीका के ज्वालामुखी से संबंध के विषय में चर्चा की गई। विज्ञान के अनुसार मानव जाति वास्तव में वानर प्राणी से संबंधित है (जिसके अन्य सदस्य हैं चिम्पांजी, गोरिल्ला, ओरेंगउटेन, लंगूर इत्यादि) तथा आश्चर्य की बात यह है कि वानरों में भी जातिप्रथा देखी गई है जिसके अनुसार वानर दल का प्रत्येक वानर सदस्य अपनी निर्धारित जाति के अनुसार ही अपने समाज का अंग बन अपना स्थान ग्रहण करता है तथा पोषण पाता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि जाति प्रथा का भी उद्गम पशु जाति अथवा पशु व्यवहार से है। विज्ञान के अनुसार मनुष्य बनने से पहले वह अफ्रीका के जंगलों में पेड़ों पर रहता था। अतः संभवतः उसकी यह सामाजिक व्यवस्था, जातिप्रथा के रूप में, उसके मनुष्य बनने के पश्चात भी कायम रही होगी। अतः आज यह प्रथा आज के उन्नत मनुष्य प्राणी के लिए सर्वथा त्याज्य है क्योंकि जाति प्रथा को मानने का अर्थ है पशु समान व्यवहार करना और इसके फलस्वरूप गरीबी, अशिक्षा, घृणा तथा हिंसा को बढ़ावा देकर नैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक पतन कराना। कहा जाता है कि विदेशियों ने 'फूट डालो और राज करो' की कूटनीति का उपयोग कर लंबे समय तक राष्ट्र पर शासन किया परन्तु ध्यान देने वाली बात यह भी है कि हमने जातिप्रथा के द्वारा स्वयं ही अपने समाज को टुकड़ों-टुकड़ों में बांट कर राष्ट्र को कमजोर किया हुआ था। चिंतन का विषय यह भी है कि ऐसे समाज में यदि भगवान भी अवतरित हों तो उनके साथ कैसा व्यवहार होगा?

<u>जात न पूछो साधु की</u> : एक बार भगवान बुद्ध अपने भिक्षु संघ के साथ कौशल देश के इच्छानंगल ग्राम में पधारे। वहां पर एक पोक्खरसति (पुष्करसति) नामक धनाढ्य आचार्य को यह जानने की इच्छा हुई कि वे शाक्यकुल से गौतम, विद्याचरण सम्पन्न, अरिहंत, मोक्ष के मार्ग के ज्ञाता, बुद्ध, अनुत्तर, सभी लोकों के ज्ञाता, देवों मनुष्यों के आचार्य तथा भगवान हैं जो केवल शुद्ध ब्रह्मचर्य पर आधारित धर्म को प्रकाशित करते हैं जो आरंभ में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी तथा अंत में भी कल्याणकारी है इत्यादि – उनकी यह ख्याति कहां तक सही है।

पोक्खरसति ने अपने अम्बट्ठ नामक शिष्य से कहा कि वह उनके ही समान सभी वेदों का ज्ञाता, मंत्रधर, कर्मकांडों का ज्ञाता तथा सभी प्रचलित विद्याओं में पारंगत है, (''जो मैं जानता हूं वही तुम जानते हो''), अतः वह श्रमण गौतम के पास जाकर पता करे कि वे उनकी ख्याति अनुसार हैं कि नहीं तथा उनके भगवान होने के 32 लक्षणों की जांच करे। शिष्य अम्बट्ठ अपने अनेक साथियों समेत रथ से भगवान बुद्ध के स्थान पर गया परन्तु वहां वह अशिष्टतापूर्ण व्यवहार करने लगा, न तो उसने अभिवादन ही किया और न ही आसन ग्रहण किया तथा चहल कदमी करते हुए भगवान से प्रश्नोत्तर करने लगा। भगवान के पूछने पर कि क्या उसका यही तरीका है कि आयु में अधिक गुरूवर आचार्यों से इस प्रकार वार्तालाप किया जाता है। अम्बट्ठ ने कहा कि – 'हे गौतम, मुंडक, श्रमण, इभ्य, ब्रह्मा के पैर की संतान, उनके साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है।'

भगवान बुद्ध : 'परन्तु अम्बट्ठ तुम्हारे आने का जो उद्देश्य है उसे तो कहो, ऐसा लगता है कि तुम्हें शिष्टता अभी और सीखनी चाहिए।'
अम्बट्ठ ने व्यंग करते हुए कहा: 'तुम्हारी शाक्य जाति निम्न (नीच) तथा असभ्य है, हिंसक है जो ब्राह्मणों को आदर, सत्कार, उपहार नहीं देती।' इस प्रकार अम्बट्ठ ने पहली बार भगवान का अपमान कर दिया।
भगवान बुद्ध : 'परन्तु शाक्यों ने ऐसा क्या किया कि तुम अप्रसन्न हो।'
अम्बट्ठ : 'मैं एक बार आप शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु के राजसभागार में गया परन्तु उन्होंने मुझ पर ध्यान नहीं दिया तथा मुझे बैठने को भी नहीं कहा, इसलिए मैं कहता हूं कि आप शाक्य निम्न (नीच) जाति के हैं।'
इस प्रकार अम्बट्ठ ने दूसरी बार भी भगवान का अपमान किया।
भगवान बुद्ध: 'ऐसी छोटी सी बात के लिए यह सही नहीं है, अम्बट्ठ, कि सारी जाति को निम्न कहा जाए।'
अम्बट्ठ : 'मैं मानता हूं कि चार में से तीन ही जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य ही ब्रह्मा के समीप हैं तथा हमारा आदर पूजा न करने के कारण मैं तुम्हारी शाक्य जाति को निम्न (नीच) चतुर्थ ही मानता हूं।'
इस प्रकार से अम्बट्ठ ने भगवान का तीसरी बार अपमान कर दिया।
अब भगवान ने एक युक्ति पर विचार किया, उन्होंने पूछा: 'अम्बट्ठ, क्या है गोत्र तुम्हारा'।
अम्बट्ठ: 'मैं कान्हायन गोत्र से हूं'।

भगवान बुद्ध : 'अम्बट्ठ, शाक्य जाति तो इक्ष्वाकु वंश से क्षत्रिय हैं। पुराने समय में उनकी एक दासी से श्याम वर्ण पुत्र हुआ जिसका नाम कान्ह रखा गया। उस दासी के पुत्र

से ही तुम्हारा कान्हायन वंश का उद्गम हुआ। कहो यह सत्य है कि नहीं'।
दो बार पूछने पर भी अम्बट्ठ चुप रहा।

भगवान बुद्धः 'कहो यह सत्य है या नहीं, सत्य नहीं कहा तो अभी तुम्हारा सर सात टुकड़ों में फट जाएगा।'

ऐसा कहते ही अम्बट्ठ को अपनी अंर्तदृष्टि में एक क्रोधित दिव्य शक्ति दिखाई दी जोकि अपने हाथ में भयंकर प्रज्वलित दिव्य अस्त्र लिए हुए थी तथा उस पर आक्रमण के लिए तैयार थी। मृत्यु को इतना समीप जानकर अम्बट्ठ भय से आक्रांत हो भगवान के चरणों में गिर गया तथा उसने स्वीकार कर लिया कि उसके कान्हायन वंश का उद्गम दासी पुत्र से हुआ है।

यह सुनते ही पासा पलट गया, वहां उपस्थित अम्बट्ठ के साथियों ने ही अम्बट्ठ को दुर्जात, अकुलीन, दासी पुत्र, निम्न आदि अपशब्दों से धिक्कारना आरंभ कर दिया परन्तु करूणावान भगवान ने सबको रोका और कहा कि यह सत्य है कि कान्हायन वंश दासी पुत्र कान्ह से आरंभ हुआ परन्तु, यह भी सत्य है कि कान्ह एक महान ऋषि थे तथा उनकी उच्च ऋद्धि-सिद्धि के कारण ही इक्ष्वाकु राजाओं ने अपनी कन्या का विवाह उनसे कर दिया, अतः अम्बट्ठ को निम्न न कहें। इसके उपरांत भगवान बुद्ध ने कहा कि इसी कारण कपिलवस्तु के शाक्य राजवंशियों ने अम्बट्ठ का अधिक आदर सत्कार नहीं किया।

भगवान ने कहा कि जो व्यक्ति जातिवाद, गोत्रवाद आदि में फंसे है, मनुष्यों को ऊंचा-नीचा समझते हैं वे अनुपम दिव्य 'विद्या' तथा 'आचरण' में सम्पन्न नहीं हो सकते। अम्बट्ठ ने पूछा कि 'विद्या' तथा 'आचरण' क्या है। भगवान ने उसे समझाया कि जब-जब संसार में बुद्ध उत्पन्न हो कर (गौतम 24वें बुद्ध माने जाते हैं) स्वयं अनुभव किए, मोक्ष के मार्ग को आख्यात करते हैं, उनके इस पावन मार्ग को ठीक प्रकार से समझना ही दिव्य विद्या है तथा शील का पालन करते हुए जब ध्यान में समाधि के द्वारा जो ज्ञान उत्पन्न होता है वह ही 'विद्याचरण' है :

कामगुणों को शांत कर, अकुशल गुणों का त्याग कर, सवितर्क, सविचार, सविवेक प्रथम ध्यानसमाधि के प्रीतिसुख में विहार करना, यह है दिव्य आचरण।

वितर्क विचारों को समाप्त कर, चैतन्य भाव से अवितर्क, अविचार द्वितीय ध्यानसमाधि के प्रीतिसुख में विहार करना, यह है दिव्य आचरण।

संसार के प्रीति राग के प्रति उपेक्षा भाव से, वैराग्य भाव से, एकचित्त हो संप्रज्ञान से मन व शरीर के संवेगों के प्रति सावधान हो तृतीय ध्यान समाधि के सुख में विहार करना, यह है दिव्य आचरण।

इस प्रकार से निर्लिप्त, परिशुद्ध, अविकारी, समाहित चित्त से एकाग्र हो इन्द्रियातीत, दिव्य ज्ञान का प्रत्यक्ष दर्शन करता है यह है चतुर्थ ध्यान समाधि, यह है दिव्य आचरण।

ध्यानसमाधि के उपरांत चित्त को शुद्ध कर दिव्य शक्तियों को प्राप्त करना भी विद्याचरण में ही आता है। भगवान ने पूछा कि जिन ऋषियों जैसे कि वामका, वामदेव, विश्वामित्र, यमदग्नि, अंगीरस, भारद्वाज, वशिष्ठ, कश्यप द्वारा रचित शास्त्रों का वह पाठ करता है, क्या उसने अथवा उसके आचार्य पोक्खरसति ने इन ऋषियों के समान कभी संसार के सुखों का त्याग किया? तुम तो केवल राजा द्वारा दिए गए भरण पोषण से, आनंद के साथ जीवन जीते हो। क्या ध्यान तपस्या की? क्या सन्यास धर्म के अनुसार वन के कन्द मूल खा कर गुजारा किया, क्या भिक्षा मांग कर जीवन जिया? इस पर अम्बट्ठ ने कहा कि ऐसा तो नहीं किया। (अतः वे केवल पुस्तकीय ज्ञान में ही पारंगत थे)।

इसके उपरांत अम्बट्ठ ने भगवान बुद्ध के शरीर पर अवतार होने के सभी 32 लक्षणों को देखा, उनके पैरों में उपस्थित चक्र को देखा तथा वहां से जाकर अपने आचार्य पोक्खरसति को यह सब धटनाक्रम बताया। सुनते-सुनते ही आचार्य पोक्खरसति को अपने शिष्य अम्बट्ठ के व्यवहार से बड़ा दुख हुआ तथा वह विलाप करने लगा : ''अहो वत रे, यह स्वयं को कैसा पण्डित कहता है। अहो वत रे, यह स्वयं को कैसा बहुश्रुत कहता है। अहो वत रे, यह स्वयं को कैसा वेदों का ज्ञानी कहता है। अरे ऐसा व्यवहार करने से तो मृत्युपरांत दुर्गति/नरक की प्राप्ति होगी। तूने अम्बट्ठ, भगवान गौतम से ऐसा-ऐसा कहा। ऐसा तो मैं इस-इस प्रकार से भगवान गौतम से कभी भी नहीं कहूंगा। अहो वत रे ....'' ऐसा कहते हुए क्रोधित हो कर, उन्मत्त, उसने अपने शिष्य अम्बट्ठ को जोर से लात मार कर दूर धकेला। अब उसने पश्चाताप करने का निश्चय कर लिया। शाम हो चली थी परन्तु फिर भी वह तुरंत अपने रथ पर सवार हो कर भगवान बुद्ध के आश्रम में पहुंचा। तब तक दीप जल उठे थे। ब्राह्मण पोक्खरसति ने उन्हें आदरपूर्ण अभिवादन किया तथा अपने शिष्य अम्बट्ठ के व्यवहार के लिए क्षमा याचना की। भगवान ने उनके सुखी होने का आशीर्वचन कहा। पोक्खरसति ने भी उनके पैरों में चक्र समेत भगवान का अवतार होने के 32 लक्षणों को भगवान बुद्ध पर देखा तथा नीचे आसन पर बैठ कर भगवान से शिष्यों समेत अगले दिवस भोजन के लिए आमंत्रित किया।

अगले दिवस भगवान बुद्ध अपने शिष्यों समेत भिक्षापात्र लिए पोक्खरसति के निवास पर पहुंचे। बुद्धिमान पोक्खरसति ने भगवान बुद्ध को श्रृद्धापूर्वक अपने हाथों से ही कौर बना-बना कर भोजन करा कर तृप्त किया। भोजन के उपरांत भगवान ने बुद्धों के द्वारा प्रकाशित ज्ञान का प्रवचन किया, संसार में दुख तथा ध्यान तपस्या द्वारा दुख से परे जाने का, मोक्ष के मार्ग का ज्ञान प्रकट किया । सुनते-सुनते ही पोक्खरसति को दुर्लभ प्रथम

ध्यानसमाधि का अनुभव हुआ, उसकी अंर्तदृष्टि में ज्ञानोदय हुआ जिससे वह कृतार्थ हुआ तथा वह अपने परिवार समेत भगवान बुद्ध का सदा के लिए शिष्य बन गया।

अम्बट्ठ सूत्र, दीर्घनिकाय 1.3, त्रिपिटक

इस प्रकार पोक्खरसति धन्य हुआ, उसने जाना कि रटेरटाए पुस्तकीय ज्ञान तथा अनुभव किए ज्ञान में कितना अंतर है। भारत के महान योग दर्शन के अनुसार मनुष्य ध्यान-तपस्या के द्वारा देवता, ब्रह्मा या ईश्वर तुल्य भी बन सकता है। स्वानुभूति के द्वारा ईश्वरतत्वदर्शी योगियों तथा ऋषि मुनियों ने सारे जगत में, सभी प्राणियों में सर्वत्र ईश्वर को ही पाया अतः अहिंसा के माध्यम से सभी को प्रेम करने का मार्गदर्शन किया – 'अहिंसा परमों धर्मः'। अहिंसा ही वह धर्म है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्नता प्रदान कर उच्चगति की और ले जाता है तथा प्राणीमात्र से प्रेम करने के कारण, तथा सर्व की मंगल कामना करने के द्वारा, किसी भी जाति-वर्ण का मनुष्य ब्रह्मलोक की प्राप्ति कर पूज्य बन सकता है, ऐसा बुद्ध का अटल वचन है।

****

व्यर्थ जातिवाद

वनस्पतियों, वृक्षों में अनेक जातियां हैं, कीटों में अनेक जातियां हैं,
पशुओं में अनेक जातियां हैं, सर्पों में अनेक जातियां हैं,
जल के जीवों में अनेक जातियां हैं, पक्षियों में अनेक जातियां हैं
परन्तु इन सब प्राणियों के विपरीत, मनुष्यों में अंतर लगभग न के बराबर अर्थात नगण्य है।

बुद्ध, सुत्त निकाय (8.18) त्रिपिटक

(अर्थात सभी मनुष्य एक समान हैं तथा यह वचन विज्ञान के अनुसार भी पूर्णतः सही है।)

'प्रकृति की एक अनमोल देन है, ''पानी'' उसको बचाये रखना'

कपिल अग्रवाल
अभियंता, भोपाल कार्यालय

प्रकृति, पचंतत्व आकाश, जल, जमीन, हवा और अग्नि से बनी है। प्रकृति अनुसार यह पंचतत्व मनुष्य की समृद्दि एवं स्वस्थ जीवन के अस्तित्व के लिए अपना-अपना संतुलन बनाये रखने की सिद्ध क्षमता रखते हैं। परन्तु अप्राकृतिक तरीके से इन पंच महाभूतों की प्राकृतिक गतिविधियों को बाधित कर विकास के विकल्प को चुनते हुये प्रकृति के संतुलित स्वभाव को विकृत रूप देने वाले, हम ही तो जिम्मेदार हैं।

मानव जीवन के लिए पेयजल की आवश्यकता मात्र 5-8 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन होती है, स्थान विशेष तथा रहन-सहन की पद्धति के आधार पर आवश्यकताएं कम या अधिक हो सकती हैं। परंतु विकास व समृद्दि के नाम पर 500-700 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन तक विकासशील देश व्यय करते हैं। क्या यह प्राकृतिक तुला के साथ खिलवाड़ नहीं है? ''जल'' एक तत्व हैं, जो न तो निर्मित किया जा सकता है और न ही उसे पूर्णतया नष्ट किया जा सकता है, ''पानी'' यह अपार अनंत - Infinite तत्व है। पानी जोकि तीनों ठोस, द्रव एवं वाष्प के रूपों में उपलब्ध है, को किफायत से उपयोग कर ''जल'' की महत्ता को भविष्य की आवश्यकताओं को सुरक्षित रखना अपना दायित्व है।

जमीन की अपनी उर्वरता क्षमता की प्राथमिक आवश्यकताओं के अनुसार दोहन करने की भी सीमा हमें भूलनी नहीं चाहिये! प्रकृति में हवा के प्रदूषण की चिंता करना क्या केवल यह जिम्मेदारी वैज्ञानिकों की हैं? हमें कम से कम वाहनों का उपयोग कर अधिक से अधिक सार्वजनिक संसाधनों को उपयोग कर वायु प्रदूषण की रफ्तार कम करनी होगी। अग्नि हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। अग्नि या ऊर्जा का दोहन आवश्यकता अनुसार करना, पेड़ पौधे लगाना और लगे हुये पौधो को बचाकर रखना मानव कर्तव्य है।

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून, पानी गये न ऊबरे मोती, मानस चून"।

शाब्दिक अर्थ है मोती, मनुष्य एवं चूने का अस्तित्व जीविका (Exutenance) पानी के बिना संभव नहीं है।

हम सब जानते हैं कि पानी हमारे लिए कितना जरूरी है? पानी के बिना जिंदगी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जल ही जीवन है, ''केवल उदघोषमा नहीं एक सर्वभौमिक वास्तविकता है।" पानी के लिए ये कहना ठीक ही है कि ''है कितना अपरिहार्य पानी, सांसो सा अनिवार्य पानी''। पानी से हमारा रिश्ता जन्म लेते ही जुड़ जाता है, और जीवन के अन्तिम क्षणों तक जुड़ा रहता है। शिशु के जन्म लेते ही उसे सबसे पहले स्नान कराया जाता है और मनुष्य की अंतिम विदाई भी उसके कंठ में गंगा जल की कुछ बूंदे डाल कर की जाती है। तो है ना पानी से हमारा जीवन पर्यन्त का नाता, कितने निकट का और कितनी सार्थकता भरा। पानी की महत्त्ता प्रतिपादित करने की जरूरत नहीं है, फिर भी यह कहना ठीक ही होगा कि पानी तरलता का प्रतीक है, निरंतरता का प्रतीक है, एकाकार हो जाने का प्रतीक है। पानी में कोई भी रंग मिला दीजिए वह उसी रंग का हो जाता है। बहता पानी हमें अविरल आबाद आगे बढ़ने का संदेश देता है। पानी सौंदर्य का बोध कराता है कि ''देखे हैं कितने ही दिलकश दिलदार चेहरे लुभाते हैं, बस वे ही, जिनके हैं पानीदार चेहरे'' । पानी लज्जा को भी परिभाषित करता है, कि बाहें पिया ने जो पकड़ी और नई नवेली हुई लाज से ''पानी-पानी''। पानी शक्ति और पौरूष का भी घोतक है। ''पानी के संग जो बहते है वो साधारण रह जाते है, और जो धाराओं को मोड़ सके वे इतिहास बनाते है'' पानी को संवेदनाओं से भी जोड़ा गया है – ''मंजिल तक नहीं पहुंचते वो, जिनके पांवों में वीर नहीं, इंसान नहीं पत्थर है वो जिनके नैनों में नीर नहीं''। पानी पूजा आचमन के लिए जरूरी है, बिना अंजुली में पानी भरे सच्चा आशीर्वाद भी नहीं मिलता और तो और पानी पीकर कौसने से बददुआएं भी अपना असर दिखाती है। पानी केवल हमारी व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं है या केवल हमारे जीवन यापन के लिए जरूरी नहीं है। हमें विकास के लिए पानी चाहिए, चाहे वह कृषि हो, कल-कारखाने हों, बिजली घर हो या आणविक ऊर्जा (Nuclear Power) के स्त्रोत हों, सभी के लिए पानी की नितांत आवश्यकता है। समुद्र मंथन में हमें बहुत से रत्न मिले थे। आज भी पानी हमें सुख-समृद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, वैभव, सब कुछ दे रहा है। हमारे खेत खलियान अनाज से भरे पड़े है। ऊर्जा के क्षेत्र में जल जनिम ऊर्जा की बहुत बड़ी भागीदारी है। बड़े-बड़े बांध, हमारे विकास की गाथा कहते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि ''है कितना चमत्कारी पानी, जीवन का अंतिम सत्य पानी, जीवन की पहली किल्कारी पानी है, कितना चमत्कारी पानी, परमाणु रिएक्टर भी है निरर्थक, उनमें यदि नहीं है ''भारी पानी'' और वह मुद्रा तो जाली होती है जिस पर नहीं पानीदार लकीर (वाटरमार्क)। पानी से इतनी निकटता, इतना अहम स्थान है हमारे जीवन में फिर भी हमने उसके साथ सही तालमेल नहीं बिठाया । पानी का अपव्यय हमने तो कभी सोचने की जरूरत नहीं समझी । आज कई गांव के लड़के इसलिए कुंवारे है क्योंकि वहां पानी

नहीं है और कोई भी पिता ऐसे गांव में अपनी बेटियां ब्याहने के लिए तैयार नहीं हैं। पानी की महिमा आदि काल से दोहराई जा रही है, हम समुद्रों को पूजते आए हैं, नदियां हमारी आराध्य रही हैं पर यह हमारे आचरण की विसंगति है कि जिन्हें हम पूजते है गंदा और दूषित करने में हमारा कोई सानी नही। भारत वर्ष में लगभग 71 ऐसे मुख्य शहर है जो प्रमुख नदी के सानिध्य में ही बसे हैं। नर्मदा नदी के इर्दगिर्द मध्य प्रदेश के 54 शहर बसे हैं।

पानी आकाश से गिरे तो वर्षा जल, पानी ग्लेसियर में जमे तो हिमखंड कहलाया। वर्षा जल जब वादियों से बहते हुये बहे तो नदी कहलाये। पानी को रोका तब जलाशय, पोखर, कुंड आदि कहलाता है। आँखों से टपके तो आंसु कहलाते हैं, जो मनुष्य जीवन की दोनों स्थितियों "सुख एवं दुख" की पराकाष्ठा में चरमसीमा छूते ही सवेग (Sudden) आखों से छलकता है। यही पानी हिम खंड से पिघलकर नदियों में बहकर अंतिम पड़ाव में समुद्र में लिन होता है। स्वच्छ तन में ही स्वच्छ मन रहता है और स्वच्छ मन में ही ईश्वर का वास होता है। यह बहुत पुरानी कहावत है, लेकिन इस कहावत को पानी के परिवेश में हमने कभी देखा ही नहीं, जब स्वच्छ पानी नहीं होगा तो हमारा तन स्वच्छ कैसे रहेगा और तन स्वच्छ नहीं रह पाएगा तो मन कैसे स्वच्छ रहेगा, और मन स्वच्छ नहीं रहेगा तो ईश्वर का वास कहां? इसलिए पूजा-अर्चना के बावजूद, ईश्वर हमसे दूर होते जा रहे हैं। यह हमने सोचा ही नहीं। हमें संकल्प लेना ही होगा कि ''हम अपने आस-पास के स्त्रोतों को स्वच्छ रखेगें।'' पानी का मूल्य समझेगें तथा इसे अमूल्य निधि की तरह संजो कर रखेगें। हमनें तुझसे खिलवाड़ बहुत किया, कहते हैं हम सब मिलकर Sorry पानी! अब एक बूंद भी नहीं जाएगी व्यर्थ, है अब से यही प्रतिज्ञा हमारी पानी। है कितना चमत्कारी पानी। प्रकृति का वरदान पानी, जीवन का उन्मान पानी, प्रगति का सोपान पानी और देश का उत्थान पानी, है कितना चमत्कारी पानी।

अर्थवेद में लिखा है "अपस्वन्तरम् मृवमप्प्सु भेषजम्".
यजुर्वेद में 4000 बी.सी. मे लिखा है,

"आपोवा इदं् सर्व विश्वभूतान्यापः
प्राणवापोऽ पशवापः अभमापः
अमृत मापः संराडापोऽ विराडोपः
स्मुराडापो ऽ पश्चधापों ऽ गंसत्यापः
ज्योतिर्गस्यापः ऽ यजुर्गस्यापः
सत्यमापः सर्वदेवता ऽ पोवा युर्भुव सुवरापः".

जल में अमृत है, जल में औषधियां है। स्वास्थ्य, बिना जल के अपूर्ण है। जल सभी जीव-जन्तुओं के लिए आवश्यक है। जल सर्वशक्ति से परिपूर्ण है। जल ब्रह्मांडीय अवस्था है। जल ही ज्ञान है, जल सत्य है, जल ही स्वतंत्रता एवं समन्वय का चिन्ह है। जल किसी भी प्रकार के जीवन की शक्ति का आधार है। जो भी हम समझने की चेष्टा करते हैं, वह जल पर निर्वाह करता है। जीवन के इस आवश्यक तत्व की हम प्रार्थना करते हैं।

******

''हिन्दी भाषा''

ज़ाकिर शफ़ीक अंसारी
कैड आपरेटर, खण्डवा,
भोपाल कार्यालय

सभ्य देश था, सभ्य वेश था, सभ्य हमारी भाषा थी,
बनी रहे अपनी सह पूंजी, हमें यही अभिलाषा थी।

कहां गई अपनी वह भाषा, कहां हमारा देश है,
भूल गए क्या भारतवासी, बापू का यह देश है।

आज हमारी संस्कृति पर, पश्चिम का रंग छाया है,
छोड़कर अपनी हिन्दी भाषा, अंग्रेजी को अपनाया है।

खान-पान, व्यवहार सभी कुछ, अपना नहीं पराया है,
चारों तरफ पश्चिमी सभ्यता ने, अपना रंग जमाया है।

और तो और यह नेता अपने भी इसके गुलाम हैं,
भाषण तो अंग्रेजी में देते, कहलाते महान हैं।

फिर से जगाओ, आत्म गौरव, जो भारत की शान है,
हिन्दी अपनी राष्ट्र की भाषा, यही अपनी पहचान है।

******

अमृत समान - छाछ

डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

छाछ दही से बनने वाला सर्वोत्तम पेय है जिसे दही को मथनी से मथकर बनाया जाता है। गर्मियों में छाछ पीने से अच्छा कोई ओर पेय नहीं हो सकता क्योंकि छाछ में विटामिन A , B ,C , E और K पाये जाते हैं जो कि शरीर के पोषण की जरूरतों को पूरा करते हैं। छाछ पीना खासकर गर्मियों में हमारे स्वास्थ के लिए बहुत ही लाभदायक होता है। खाना खाने के बाद एक गिलास छाछ में काला नमक और भुना हुआ जीरा मिलाकर पीने से पाचन संबंधी सभी परेशानी दूर हो जाती हैं। छाछ के बारे में यह भी मशहूर है कि जो लोग भोजन के बाद छाछ पीते हैं उन्हें वैद्य की क्या आवश्यकता है। इसलिए दोस्तों आज हम छाछ पीने से होने वाले फायदों (Benefits Of Buttermilk) के बारे में बात करते हैं।

- छाछ कैल्शियम से भरी होती है। खाने के साथ छाछ पीने से जोड़ों के दर्द में भी राहत मिलती है।
- छाछ का रोजाना सेवन करने वालों को कभी भी पाचन संबंधी समस्याएं प्रभावित नहीं करती। खाना खाने के बाद पेट का भारी होना, अरूचि आदि दूर करने के लिए गर्मियों में छाछ का सेवन जरूर करना चाहिए।
- छाछ में मिश्री, काली मिर्च और सेंधा नमक मिलाकर रोज पीने से एसिडिटी की समस्या जड़ से साफ हो जाती है।
- जिन लोगों को खाना ठीक से न पचने की शिकायत होती है। उन्हें रोजाना छाछ में भुने जीरे का चूर्ण, काली मिर्च का चूर्ण और सेंधा नमक समान मात्रा में मिलाकर धीरे-धीरे पीना चाहिए। इससे पाचक अग्नि तेज हो जाएगी।
- छाछ में हेल्दी बैक्टिरिया और कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं, साथ ही लैक्टोस शरीर में आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है, जिससे आप तुरंत ऊर्जावान हो जाते हैं।
- यदि आप डाइट पर हैं तो रोज़ एक गिलास छाछ पीना ना भूलें। यह लो कैलोरी और फैट में कम होता है।
- छाछ स्वस्थ पोषक तत्वों जैसे लोहा, जस्ता, फास्फोरस और पोटेशियम से भरी होती है, जोकि शरीर के लिये बहुत ही जरूरी मिनरलस् माने जाते हैं।
- अगर आपको कब्ज की शिकायत बनी रहती है तो अजवाइन मिलाकर छाछ पीएं।
- पेट की सफाई के लिए गर्मियों में पुदीना मिलाकर छाछ पीएं।

- वर्षा ऋतु में दही या छाछ का प्रयोग न करें। दही या छाछ कभी बासी नहीं खाना चाहिए क्योंकि इसकी खटास हमारी आंतो को नुकसान पहुंचा सकती है।
- छाछ को रखने के लिए पीतल, तांबे व कांसे के बर्तन का प्रयोग कभी न करें। इन धातुओं से बने बर्तनों में छाछ रखने से वह जहर समान हो जाती है।

****

मैं भारत हूं

सी.एच.उदयश्री
डी.ई.ओ.,हैदराबाद कार्यालय

मैं भारत हूं।
तिरंगा है मेरी पहचान
अद्वितीय संस्कृति और विरासत है मेरी शोभा
हिमालय मेरी शान, ताज है मेरा नाज,
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारा
जो कोई भी हो वेद, पर
अनेकता में एकता है मेरा धर्म।
मेरी नदियां, मेरे पर्वत सिखाते हैं जीवन जीना
काफी सह लिया वर्षों तक परायों का हम पर शासन
आजादी की हवा मिली है कई बलिदानों के बाद
इस मिट्टी की आजादी के लिए
गांधी, नेहरू, आजाद, गोखले, बोस,
तिलक, भगत, पटेल ने कर दिया जीवन बलिदान।
सत्तर साल की इस आजादी को मना रही उनकी याद में
देश-विदेश जाते फिर भी करते हैं मेरा सम्मान
खेल, साहित्य, विज्ञान कुछ भी हो,
रोशन है मेरा नाम
नाज है अपने नाम पर
मैं हूं भारत।

*****

राजभाषा अधिनियम - 1963 की विशेषताएं

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी, उपबंध करने के लिए अधिनियम

संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा उन सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए, जिनके लिए वह 26 जनवरी, 1965 से पहले प्रयोग में लाई जाती थी, प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी।

केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों के बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाएगा। जब तक वहां के कर्मचारी हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक यथास्थिति अंग्रेजी या हिन्दी में अनुवाद दिया जाएगा।

निम्नलिखित प्रकार के कागजात, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में द्विभाषी रूप में जारी किए जाएंगे:-

1	संकल्प	Resolutions
2	सामान्य आदेश	General Orders
3	नियम	Rules
4	अधिसूचनाएं	Notifications
5	प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन	Administrative and other Reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Communiques
7	संसद के किसी सदन या सदनों में पेश किए जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन	Official Papers to be laid before a House and Houses of Parliament
8	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र	Official Papers to be laid before a House and Houses of Parliament
9	संविदा	Contracts
10	करार	Agreements
11	अनुज्ञप्तियां	License
12	अनुज्ञा-पत्र	Permits
13	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
14	निविदा प्रारूप	Forms of Tender

उपर्युक्त उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, सरकारी अधिकारी और कर्मचारी हिन्दी या अंग्रेजी में ऐसे काम करेंगे कि राजकीय कार्यों के शीघ्रता और दक्षता से निपटाने में, कोई अड़चन न आए। इस प्रसंग में, जनसाधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाना भी आवश्यक है।

जब तक अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को समाप्त करके ऐसे सभी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, इस आशय का संकल्प पारित नही कर दिया जाता और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता, तब तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा।

राजभाषा के संबंध में एक संसदीय राजभाषा समिति गठित की जाएगी। यह समिति संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति की पुनरीक्षा करके राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगी।

शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित किसी अधिनियम, अध्यादेश, आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का हिन्दी में अनुवाद, उसका हिन्दी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा। इस बीच, उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषाओं का वैकल्पिक प्रयोग राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से किया जा सकता है।

इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए, केन्द्रीय सरकार, नियम शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी।

******

अपनी सुबह का खाता राष्ट्रभाषा हिन्दी से खोलिए। गुड मार्निंग नहीं 'सुप्रभात' बोलिए।

पुरस्कार वितरण समारोह
पुरस्कार वितरण समारोह
वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED

पुरस्कार वितरण
लिमिटेड

साथ-साथ एक साथ (7.7.17)

सी.एच.उदयश्री
डी.ई.ओ., हैदराबाद कार्यालय

कदम कदम बढ़ाते चलें,
साथ-साथ एक साथ,
तिरंगा हाथ में उठाते चलें,
साथ-साथ एक साथ।

आज (7.7.17) ने फिर से याद दिलाया हमें,
साथ-साथ एक साथ।
आसमान में उड़ते पंछी
साथ-साथ एक साथ।
गुन-गुन गुन-गुन गाते भंवरे
शहद बनाते एक साथ,
साथ-साथ एक साथ।

बूंद-बूंद पानी मिलकर
बनती है बड़ी प्रवाह
अक्षर-अक्षर जोड़ने से
बनती है अक्षरमाला।

सा रे गा मा जोड़कर
बनता है सुरीला संगीत
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
मिलकर बनाते हैं इस जग को

प्रकृति में है भावना एक साथ की,
क्यों हममें है इतना अंतर
भेद-भाव छोड़कर रहना है हमें साथ-साथ
करना है काम एक साथ
साथ-साथ एक साथ।

******

हिन्दी का विकास – राजभाषा के रूप में

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान द्वारा मान्यता प्रदान की गई क्योंकि यही एक ऐसी भाषा थी जिसे अधिक से अधिक लोग बोलते व समझते थे। हर राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है जिसमें वहां के रहने वाले लोगों के खान-पान, रहन-सहन व बोलचाल की झलक मिलती है। भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचारों को दूसरों को समझाने में समर्थ होते हैं और एक दूसरे के नजदीक आते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण में भाषा का स्थान सर्वोपरि है। महात्मा गांधी ने कहा था, ''मेरे लिए भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है''। स्वराज तो हमें मिला पर अंग्रेजी के प्रति मोह न गया जो हमारी मानसिक गुलामी का परिचायक है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकांश भागों में बोली व समझी जाती है इसलिए इसे संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और इसका विकास निरंतर जारी है।

हिन्दी के उचित विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी विचारधारा को बदलते हुए इसे इतना सम्मान दें जितना अन्य देशों के लोग अपनी भाषा को देते हैं। महादेवी वर्मा ने कहा ''किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी भाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है''। अपनी भाषा का सम्मान हम तभी कर सकते हैं जब हम हर क्षेत्र में केवल उसी का प्रयोग करें। इससे हिन्दी का विकास भी होगा और हमें अपने विचारों को प्रस्तुत करने की उचित अभिव्यक्ति भी मिलेगी क्योंकि अपनी भाषा के माध्यम से विचारों को प्रकट करने की जो स्वतंत्रता मिलेगी वो किसी दूसरी भाषा से नहीं मिल सकती।

राजभाषा शासन और जनता के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो सरकार की नीतियों को जनता तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। हम अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके इसे बढ़ावा देने में एक छोटी सी भूमिका निभा सकते हैं। हम अपना अधिकतर कार्य हिन्दी के माध्यम से ही कर सकते हैं। प्रायः लोग सोचते हैं कि कार्यालय में प्रयोग में लाई जाने वाली हिन्दी अलग प्रकार की होती है और कठिन होती है। परन्तु ऐसा नहीं है आप बोलचाल की साधारण हिन्दी का प्रयोग करके अपना कार्यालय का कार्य कर सकते हैं और इसके विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।

आज राजभाषा इतनी सरल, सुबोध व सुगम हो गई है कि हम आसानी से हिन्दी पढ़-लिख सकते हैं। आम प्रचलन के शब्दों को हम ज्यों का त्यों देवनागरी में लिख सकते हैं जिससे हमारा काम बहुत आसान हो जाता है और इस प्रकार हम हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

हिन्दी में कार्य करते समय अंग्रेजी शब्द का पर्याय ढूंढने में समय न गवांये बल्कि ऐसी स्थिति में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों अपना ले क्योंकि वे हमारी भाषा में इस प्रकार रच बस गए हैं कि हम हिन्दी में बात करते समय या कार्य करते समय उनका प्रयोग करते हैं तो हमें यह आभास भी नहीं होता कि ये दूसरी भाषा के शब्द हैं जैसे स्कूल, कम्प्यूटर इत्यादि।

राजभाषा हिन्दी को बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं। सरकार की नीति हिन्दी को थोपने की नहीं बल्कि स्वेच्छा से अपनाने की रही है। सरकार के इन प्रयासों में राजभाषा विभाग की स्थापना, अधिनियम, नियम व संसदीय राजभाषा समिति आदि का गठन प्रमुख है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियम बनाए जाते हैं और विभिन्न स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जाती हैं। आज के समय की यह आवश्यकता है कि वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें हिन्दी का ज्ञान है वे राजभाषा हिन्दी में अनिवार्य रूप से कार्य करते हुए इसके विकास के महायज्ञ में अपने सहयोग की आहुति अवश्य डालें।

14 सितम्बर, 1949 का दिन राजभाषा हिन्दी के लिए एक यादगार दिन है क्योंकि इसी दिन हमारी संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के पद पर सुशोभित किया था। राजभाषा हिन्दी आजाद देश की भाषा है जबकि अंग्रेजी गुलामी की जो हमें उन दिनों की याद दिलाती है। राजभाषा के विकास में जो व्यवहारिक समस्याएं हैं उन्हें दूर करना मुश्किल नहीं है परन्तु यह तभी सम्भव होगा जब हम अपनी विचारधारा व दृष्टिकोण में बदलाव लाएंगे। इसके प्रयोग में हमें थोड़ा उदार होना होगा। राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है और यह तभी संभव है जब हम अधिक से अधिक कार्य अपनी भाषा में करें।

हिन्दी की सरलता, वैज्ञानिक और सर्वव्यापकता को देखते हुए इसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना अधिकार जमा लिया है। हिन्दी में कार्य करना आसान है और यदि इच्छाशक्ति है तो इसके लिए किसी पर निर्भर रहने की जरूरत भी नहीं होती केवल हिन्दी में काम करने की इच्छा होनी चाहिए। आज का युग प्रौद्योगिकी का युग है हिन्दी में इन्टरनेट

तक विकसित किया गया है। हिन्दी साफ्टवेयर व नवीनतम यांत्रिक सुविधाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें ताकि हिन्दी के प्रयोग में जो मूलभूत समस्याएं है उन्हें दूर करते हुए सफलतापूर्वक हिन्दी में कार्य किए जा सके। इसके विकास के लिए उदारतापूर्वक दृष्टिकोण अपनाते हुए समर्पण भाव से कार्य किया जाए तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे।

अंत में मेरा आपसे अनुरोध है कि इस लेख को पढ़ने के बाद आप प्रतिज्ञा लें कि आप बेझिझक अपने कार्यालय के कामकाज में हिन्दी की शुरूआत आज से ही करेंगे।

****

किचन में सहायक टिप्स

- ❖ सख्त नींबू को अगर गरम पानी में कुछ देर के लिए रख दिया जाये तो उसमें से आसानी से अधिक रस निकाला जा सकता है।
- ❖ महीने में एक बार मिक्सर और ग्राइंडर में नमक डालकर चला दिया जाये तो उसके ब्लेड तेज हो जाते हैं।
- ❖ नूडल्स उबालने के बाद अगर उसमें ठंडा पानी डाल दिया जाये तो वह आपस में चिपकेंगे नहीं।
- ❖ पनीर को ब्लोटिंग पेपर में लपेटकर फ्रिज में रखने से यह अधिक देर तक ताजा रहेगा।
- ❖ मेथी की कड़वाहट हटाने के लिये थोड़ा सा नमक डालकर उसे थोड़ी देर के लिये अलग रख दें।
- ❖ एक टी स्पून शक्कर को भूरा होने तक गरम करें। केक के मिश्रण में इस शक्कर को मिला दे। ऐसा करने पर केक का रंग अच्छा आयेगा।
- ❖ फूलगोभी पकाने पर उसका रंग चला जाता है। ऐसा न हो इसके लिए फूलगोभी की सब्जी में एक टी स्पून दूध अथवा सिरका डाले। आप देखेगें कि फूलगोभी का वास्तविक रंग बरकरार है।
- ❖ आलू के परांठे बनाते समय आलू के मिश्रण में थोड़ी सी कसूरी मेथी डालना न भूलें। परांठे इतने स्वादिष्ट होंगे कि हर कोई ज्यादा खाना चाहेगा।
- ❖ आटा गूंधते समय पानी के साथ थोड़ा सा दूध मिलायें। इससे रोटी और परांठे का स्वाद बदल जाएगा।
- ❖ दाल पकाते समय एक चुटकी पिसी हल्दी और मूंगफली के तेल की कुछ बूंदे डाले। इससे दाल जल्दी पक जायेगी और उसका स्वाद भी बेहतर होगा।

******

आती जाती शाम....!

मुकेश शर्मा
अपर मुख्य अभियंता
अहमदाबाद कार्यालय

दूर क्षितिज में, डूबते सूरज की
सिमटती रश्मियों के मध्य, घिर आती शाम।

परिंदों के कलरव में, वृक्षों पर नीड में
चहचहाती आ जाती, गुनगुनाती हुई शाम।

दफ्तर से घर को, लौटते थके कदमों से
लम्बी परछाइयां फैलाती, उतर आती शाम।

लक्ष्य के दबाव में, ऑफिस कम्प्यूटर स्क्रीन पर
या कभी ट्रैफिक जाम में, फिसलती टूटते वादों की शाम।

चाय की चुस्कियों में, दिन भर की यादों को समेटे
अपनों से बतियाती, मीठी सी एक शाम।

मन्दिर की आरती में, घंटी ढोल नगाड़ों के नाद में
धूप दीप चंदन से, महक उठती शाम।

कभी किसी ख़्याल से, भीगी नम आँखें लिये
रात के अंधेरों में डूबती, बोझिल उदास शाम।

मन के दर्पण पर, खुशनुमा पलों के
चित्र उकेरती खामोश, पहाडों की शाम।

साबरमती के जल में चिरागों से प्रतिबिम्बित
झिलमिल मुस्कुराती, रिवरफ्रंट की शाम।

हर पल हर दिन, खुशी के रंग बिखेरो
गिले शिकवे मिटा लो, गा लो गुनगुना लो
सपने सजा लो, जी भर के जी लो
जो चाहा पा लो, क्योंकि बता कर नहीं आती
जिंदगी की शाम!

******

स्वच्छ भारत अभियान

मो.काशिफ शमीम
अभियंता, अहमदाबाद कार्यालय

स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन या स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राजनीति मुक्त एवं देश भक्ति से प्रेरित अभियान है। स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिनांक 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी के 145वें जन्मदिन पर की गई । यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत अपने शहरों एवं गांवों को साफ रखने का कार्य किया जाता है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत शौचालयों का निर्माण करना, शौचालयों का प्रयोग करने के लिए लोगों को प्रेरित एवं जागरूक करना, अपने शहरों एवं गांवों की सड़कों एवं गलियों को साफ करने का कार्य है। कोई भी विकसित देश स्वच्छ है ये हम देख सकते हैं। स्वच्छ भारत, देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जब से स्वच्छ भारत अभियान का आरंभ हुआ है तब से लोग इस अभियान में उल्लास के साथ भाग ले रहे हैं। भारत सरकार भी स्वच्छ भारत अभियान के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम का आयोजन कर रही है एवं नागरिक भी बढ़-चढकर हिस्सा ले रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत शौचालयों का निर्माण एवं प्रयोग करने पर एक फिल्म भी बनी है जिसका शीर्षक है ''टायलेट – एक प्रेम कथा''। दर्शकों ने इस फिल्म को काफी पसंद किया है एवं लोगों में इसके चलते जागरूकता फैली है। स्वच्छ भारत अभियान को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने सरकारी कार्यालयों में पान, गुटखा आदि के सेवन पर प्रतिबंध लगा दिया है। अतः हमें स्वच्छ भारत अभियान में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए एवं लोगों को जागरूक भी करना चाहिए, क्योंकि स्वच्छता विकास की पहली सीढ़ी है और भारत जैसे विकासशील देश के लिए आवश्यक है। स्वच्छता से पर्यटन को भी बढावा मिलेगा।

****

सितारों को न छू पाना, लज्जा की बात नहीं ।
लज्जा की बात है, मन में सितारों को छू लेने का हौसला ही न होना।
- डा0 अब्दुल कलाम

सफलता का सबक

शारदा रानी, वरि.सहायक
हिन्दी अनुभाग

एक आठ साल का लड़का गर्मी की छुट्टियों में अपने दादा जी के पास गाँव घूमने आया। एक दिन वो बड़ा खुश था, उछलते-कूदते वो दादाजी के पास पहुंचा और बड़े गर्व से बोला, " जब मैं बड़ा होऊंगा तब मैं बहुत सफल आदमी बनूँगा। क्या आप मुझे सफल होने के कुछ टिप्स दे सकते हैं?"

दादा जी ने 'हाँ' में सिर हिला दिया और बिना कुछ कहे लड़के का हाथ पकड़ा और उसे करीब की पौधशाला में ले गए।

वहां जाकर दादा जी ने दो छोटे-छोटे पौधे खरीदे और घर वापस आ गए। वापस लौट कर उन्होंने एक पौधा घर के बाहर लगा दिया और एक पौधा गमले में लगा कर घर के अन्दर रख दिया।

"क्या लगता है तुम्हे, इन दोनों पौधों में से भविष्य में कौन सा पौधा अधिक सफल होगा?", दादा जी ने लड़के से पूछा।

लड़का कुछ क्षणों तक सोचता रहा और फिर बोला, " घर के अन्दर वाला पौधा ज्यादा सफल होगा क्योंकि वो हर एक खतरे से सुरक्षित है जबकि बाहर वाले पौधे को तेज धूप, आंधी-पानी और जानवरों से भी खतरा है।"

दादाजी बोले, " चलो देखते हैं आगे क्या होता है", और वह अखबार उठा कर पढ़ने लगे। कुछ दिन बाद छुट्टियाँ ख़त्म हो गई और वह लड़का वापस शहर चला गया।

इस बीच दादाजी दोनों पौधों पर बराबर ध्यान देते रहे और समय बीतता गया। ३-४ साल बाद एक बार फिर वह लड़का अपने पेरेंट्स के साथ गाँव घूमने आया और अपने दादा जी को देखते ही बोला, "दादा जी, पिछली बार मैंने आपसे successful होने के कुछ टिप्स मांगे थे पर आपने तो कुछ बताया ही नहीं...पर इस बार आपको ज़रूर कुछ बताना होगा।"

दादा जी मुस्कुराये और लडके को उस जगह ले गए जहाँ उन्होंने गमले में पौधा लगाया था। अब वह पौधा एक खूबसूरत पेड़ में बदल चुका था। लड़का बोला, " देखा दादाजी मैंने कहा था न कि ये वाला पौधा ज्यादा सफल होगा।"

"अरे, पहले बाहर वाले पौधे का हाल भी तो देख लो", और ये कहते हुए दादाजी लड़के को बाहर ले गए। बाहर एक विशाल वृक्ष गर्व से खड़ा था! उसकी शाखाएं दूर तक फैलीं थीं और उसकी छाँव में खड़े राहगीर आराम से बातें कर रहे थे। "अब बताओ कौन सा पौधा ज्यादा सफल हुआ?", दादा जी ने पूछा। "...ब..ब...बाहर वाला! लेकिन ये कैसे संभव है, बाहर तो उसे न जाने कितने खतरों का सामना करना पड़ा होगा। फिर भी", लड़का आश्चर्य से बोला।

दादा जी मुस्कुराए और बोले, "हाँ, लेकिन challenges face करने के अपने rewards भी तो हैं, बाहर वाले पेड़ के पास आज़ादी थी कि वो अपनी जड़े जितनी चाहे उतनी फैला ले, अपनी शाखाओं से आसमान को छू ले। बेटे, इस बात को याद रखो और तुम जो भी करोगे उसमें सफल होगे - अगर तुम जीवन भर safe option choose करते हो तो तुम कभी भी उतना grow नहीं कर पाओगे जितनी तुम्हारी क्षमता है, लेकिन अगर तुम तमाम खतरों के बावजूद इस दुनिया का सामना करने के लिए तैयार रहते हो तो तुम्हारे लिए कोई भी लक्ष्य हासिल करना असम्भव नहीं है!

लड़के ने लम्बी सांस ली और उस विशाल वृक्ष की तरफ देखने लगा। वो दादा जी की बात समझ चुका था, आज उसे सफलता का एक बहुत बड़ा सबक मिल चुका था!

दोस्तों, भगवान ने हमें एक meaningful life जीने के लिए बनाया है। But unfortunately, अधिकतर लोग डर-डर के जीते हैं और कभी भी अपने full potential को realize नहीं कर पाते। इस बेकार के डर को पीछे छोडिये...ज़िन्दगी जीने का असली मज़ा तभी है जब आप वो सब कुछ कर पाएं जो सब कुछ आप कर सकते हैं...वरना दो वक़्त की रोटी का जुगाड़ तो कोई भी कर लेता है।

इसलिए हर समय play it safe के चक्कर में मत पड़े रहिये। जोखिम उठाइए... risk लीजिये और उस विशाल वृक्ष की तरह अपनी life को large बनाइये!

******

वर्तमान समय में घरों में, समाज में जो अशान्ति, कलह, संघर्ष देखने में आ रहा है, उसमें मूल कारण यही है कि लोग अपने अधिकार की मांग तो करते हैं, पर अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते ।

विश्वेश्वरैया पुस्तकालय
ई-पुस्तकालय

अंजू कौशिक
पुस्तकालयाध्यक्ष

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक द्वारा दिनांक 20 सितम्बर, 2017 को विश्वेश्वरैया ई-पुस्तकालय का उदधाटन किया गया। ई-पुस्तकालय का अभिप्राय: है कि हमारे पुस्तकालय में ऑनलाइन सुविधा जुड़ गई है।

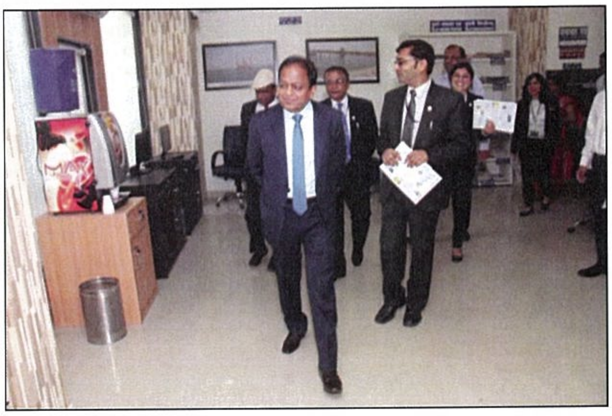

ई-पुस्तकालय में हमने Online Public Access Catalogue की व्यवस्था की है जिसके द्वारा हम अपनी सीट पर बैठकर ही अपने कम्प्यूटर पर http://10.0.0.43:8080/webopac/index.htm पर लिंक कर पुस्तकालय का पूरा

डाटा सर्च कर सकते हैं और यह जान सकते हैं कि पुस्तकालय में उपलब्ध कोई भी पुस्तक किस स्थान पर है और किस रैक में मिल सकती है। इससे हम पुस्तकालय जाकर बिना समय गवांए पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं। इस वैब पेज पर हमने पुस्तकालय द्वारा खरीदी गई सभी नई पुस्तकों के कवर पेज स्कैन करके डाले हैं ताकि सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को इसकी जानकारी मिल सके कि पुस्तकालय में ये नई पुस्तकें शामिल की गई हैं।

इसके अतिरिक्त कम्पनी ने आईएस कोड जोकि हमारी कम्पनी के लिए अत्यंत आवश्यक है, की भी ऑनलाइन खरीद की है जिसके द्वारा सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने-अपने कम्प्यूटर से जिस कोड की आवश्यकता हो उस कोड को प्राप्त कर सकते हैं। आई.एस. कोड खोलने के लिए लिंक है : http://waplib02/bis_app/home.aspx इसमें निम्नलिखित कोडस् को सर्च किया जा सकता है:-

WRD, PGD, CED, ETD, MED, MHD, TED

इसके अलावा पुस्तकालय में Kindle यानि E-Books की भी व्यवस्था की गई है। Kindle में हम किसी भी विषय की पुस्तक को खोज सकते हैं और download करके उस पुस्तक को पढ़ भी सकते हैं।

इसके साथ ही पुस्तकालय में उपलब्ध साफ्टवेयर का अपग्रेडेशन करवाया गया है। जिसके द्वारा जब भी कोई प्रयोगकर्त्ता पुस्तक जारी करवाता है या वापस करता है या प्रयोगकर्ता की पुस्तक overdue हो जाती है तो इसकी जानकारी उसे पुस्तकालय द्वारा भेजे गए SMS या ईमेल द्वारा प्राप्त हो जाएगी।

पुस्तकालय में कॉफी वेंडिंग मशीन भी रखी गई है ताकि जब भी कोई प्रयोगकर्त्ता पुस्तकालय में आए तो वह पुस्तकों के साथ कॉफी का भी आनंद ले सके।

पुस्तकालय में समय-समय पर हिन्दी व अंग्रेजी की काफी पुस्तकों की खरीद की जाती है। पुस्तकालय में तकनीकी पुस्तकों के साथ-साथ Fiction, मनोरंजन, योग, ज्ञान, बच्चों से संबंधित एवं अन्य विभिन्न विषयों पर कई पुस्तकें उपलब्ध हैं।

वाप्कोस के कार्मिकों से अनुरोध है कि विश्वेश्वैरया ई-पुस्तकालय का भरपूर लाभ उठाएं।

******

स्वस्थ जीयो

विमल किशोर, प्रारूपकार
जल संसाधन विकास

कसरत की नई-नई मशीनों को पार्क में लगते देख मैं उत्साहित था। यह एक नवोद्घाटित पार्क था। करीब-करीब दो हफ्ते से मैं इस क्रियाकलाप पर नज़र बनाए हुए था। चूंकि अभी फिनिशिंग का कार्य प्रगति पर था। अतः हाल-फ़िलहाल पार्क में प्रवेश निषेध था। इसे आप मेरी भारतीय मानसिकता भी कह सकते हैं कि मैं जल्द से जल्द मुफ्त मिलने वाली इस सुविधा का उपयोग करना चाहता था। मेरे भूटान कार्यालय में बदली के बाद मैं अपनी फ़िटनेस को लेकर लगभग जाग सा गया था। इसका एक बड़ा कारण यहां का मौसम भी रहा। यहां का मौसम इतना सुविधाजनक था कि मैंने कभी भी यहां 30 डिग्री तापमान महसूस नही किया। हो सकता है नई जगह का उत्साह या कुछ और कारण रहे हों लेकिन अब मैं स्वास्थ्य के प्रति कुछ जागरूक हो चला था।

एक तो लंबे अरसे बाद मैं फिर से कर्म-भूमि पर कुछ एक्शन के लिए तैयार था। इस समय मेरे पास एक अच्छा उभरा हुआ पेट और कुछ 5 से 10 मिनट की शारीरिक क्षमता के साथ कसरत का कुछ अपरिपक्व सा अभ्यास था। मैंने मशीनों पर प्रयास किया और लगभग 15 मिनट में ही धड़कनें बढ़ गयीं और थकान होने लगी। मैंने महसूस किया कि मैं बस एक थका हुआ आदमी ही बचा हूँ जिससे एक युवा उत्साह प्राप्त कर पाना मुश्किल है। खासतौर पर जो पेट बढ़ आया है वो मुख्य समस्या है। मैंने पाया कि मेरे सिर्फ खाने और सोने के रूटीन ने मेरे शरीर को कितना बिगाड़ दिया है।

तकरीबन 7-8 साल पहले एक मानसिक भाग-दौड़ शुरू हुई। एक लंबे सफर कि भाग-दौड़, जिसका उद्देश्य घर से ऑफिस और ऑफिस से घर पहुँचना था। इसने मेरे कीमती समय को चुरा लिया। जिस समय को शारीरिक व्यायाम और अन्य रुचिपूर्ण कार्य में लगा सकता था। मैं अक्सर जब बचपन के बारे में सोचता हूँ तो याद आता है कि कैसे हम बिना खाये-पिये खेलने चले जाते थे और वापस आ कर कैसे खाने पर टूट पड़ते थे। खेल के नाम भर से ही उत्साह से भर जाते थे। एक प्रतिशत भी अतिरिक्त वसा नहीं था शरीर पर। कितना खाना है, कब खाना है इसका कोई सवाल न तो खाने से पहले उठता था और न ही खाने के बाद। कभी कोई बीमारी नहीं, कोई पेट की समस्या नही। निश्चित ही हममें से कई लोगों ने इसी बचपन का आनंद लिया होगा पर सच में ही उसमें भरपूर जीवन था। उस समय फ़िटनेस और शारीरिक क्षमता की कोई कमी ही नहीं थी।

मेरी पहली नौकरी घर से 65 किलोमीटर दूर थी। हालांकि आने-जाने के लिए बस की सुविधा थी लेकिन ऑफिस प्रातः 8:30 बजे पहुँचने के लिए 6 बजे बस में बैठ जाना पड़ता था। दूसरी नौकरी भी घर से डेढ़ घंटे की दूरी पर ही मिल पायी। बाहरी दिल्ली में निवास होने का सबसे बड़ा नुकसान मुझे यह उठाना पड़ा कि घर के पास कोई अच्छी जॉब नहीं ढूंढ पाया। निश्चित तौर पर शारीरिक क्रियाओं को दिनचर्या से हटाना पड़ा। शारीरिक क्रियाओं का जो अवसर रविवार को क्रिकेट के माध्यम से मिलता था, वह भी जीवन की अन्य व्यस्तताओं ने धीरे-धीरे खत्म कर दिया।

दिमागी खेल की शुरुआत हो चुकी थी जिसने शारीरिक खेल को सबसे पहले मात दी और फिर शुरू होता है वह सफर जिसे हम निन्यानवें का फेर कहते हैं। इन सब से हम धीरे-धीरे इस समाज में स्थापित होते गए लेकिन इसने हमें कुछ आलसी भी बनाया और कुछ अस्वस्थ भी। हम भारतीय लोग, खासतौर पर बड़े शहरों में नौकरीपेशा लोग एक चिर-परिचित दौड़ में शामिल हो चुके हैं। व्यायाम शरीर की एक आधारभूत आवश्यकता है। भौतिक सुविधाओं को बढ़ाने के लिए व जीवन स्तर को ऊंचा करने के लिए हम अपने शरीर की आधारभूत आवश्यकताओं को भूलते जा रहे हैं। धन कमाना एक अच्छी आदत है लेकिन गलत है अपने स्वास्थ्य के साथ समझौता। हम लोग वित्त के प्रबंध में अपनी निजी जीवन के महत्व को भूलते जा रहे हैं।

एक चिंता रहित भविष्य के लिए धन की ज़रूरत निश्चित तौर पर है लेकिन साथ ही चिंता रहित जीवन के लिए स्वस्थ बने रहना सबसे ज्यादा ज़रूरी है और स्वस्थ बने रहने के लिए जरूरी है नियमित व्यायाम। शारीरिक व्यायाम हमें मानसिक रूप से स्वस्थ रहने में भी मदद करता है। जीवन में "जैसा चल रहा है चलने दो वाला नज़रिया" दीर्घकालीन समस्याओं को जन्म देता है। बीमारियों से दूरी के लिए अपने व्यस्त समय में से व्यायाम के लिए समय निकालना बेहद ज़रूरी है। अच्छा स्वास्थ्य स्कारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है। सकारात्मक्ता सफलता की मुख्य कुंजी है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना, वर्तमान में जीने की अवधारणा का समर्थक है। जीवन भी वर्तमान में निहित है। इसलिए वर्तमान में जीये, स्वस्थ जिये।

******

मातृभाषा के बिना स्वतन्त्रता बरकरार नहीं रह सकती है।

आपके पत्र

भारत सरकार
जल संसाधन, न.वि. और ग.सं. मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WR, RD and GR
SHARAM SHAKTI BHAVAN, NEW DELHI

संख्या/No. ई-11016/01/2017-हिन्दी दिनांक/Date: 22.11.2017

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड
76-सी, सैक्टर-18
गुड़गांव (हरियाणा)

विषय : गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण"।

महोदय,

आपकी हिन्दी गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' के नवीनतम अंक-85 की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। आपकी पत्रिका पूर्ण रूप से राजभाषा हिन्दी को समर्पित है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय की राजभाषा व अन्य गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित हिन्दी संबंधी लेखों के साथ-साथ तकनीकी व साहित्यिक लेख भी काफी पठनीय, ज्ञानवर्धक व उच्च स्तरीय हैं। हमेशा की भांति इस बार भी पत्रिका का मुखपृष्ठ व अंतिम पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है।

आपके मार्गदर्शन में प्रकाशित हो रही यह पत्रिका मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं विविध जानकारियों से परिपूर्ण है, जिसके लिए बधाई। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह पत्रिका उच्च मानदंड और उत्कृष्ट प्रकाशन को बनाए रखेगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु हमारी शुभकामनाएं।

भवदीय,
(सीमा [illegible])
सहायक निदेशक (रा.भा.)

CIN : L23201MH1952GOI008858 Ph.: 0124-4206008

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम) रजिस्टर्ड ऑफिस: 17, जमशेदजी टाटा रोड, मुंबई- 400020
HINDUSTAN PETROLEUM CORPORATION LIMITED
(A Government of India Enterprise) Registered Office : 17, Jamshedji Tata Road, Mumbai - 400 020
गुरुग्राम रिटेल क्षेत्रीय कार्यालय :- 104, प्रथम तल, सिल्वरटन टॉवर, गोल्फ कोर्स एक्सटेंशन रोड, सैक्टर-50, गुरुग्राम- 122018.
Gurugram Retail Regional Office : 104 First Floor, Silverton Tower, Golf Course Extension Road, Sec - 50, Gurugram - 122018

प्रति दिनांक - 17/11/17

श्री आर के गुप्ता जी
अध्यक्ष नराकास- गुरुग्राम
एवं अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड

महोदय,

आपकी पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका पूर्ण रूप से राजभाषा हिन्दी को समर्पित है। पत्रिका में विभिन्न प्रकार के लेखों तथा महत्वपूर्ण जानकारी के समावेश ने इसे वास्तव में बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक बना दिया है। विविध सामग्री समाहित किए हुए पत्रिका का यह अंक सभी रूप में सराहनीय है।

आपके संरक्षण और नराकास गुरुग्राम द्वारा राजभाषा के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों से हमारे कार्यालय को भी बहुत प्रेरणा मिली है। हमारे उत्तरी अंचल द्वारा प्रकाशित आंचलिक पत्रिका "उद्गम" और हमारी मासिक रिपोर्ट में नराकास गुरुग्राम से सम्बन्धित समाचार को शामिल किया जाता है। इस पत्रिका की एक प्रति ईमेल द्वारा आपको भेज रहे हैं।

आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका हमें नियमित रूप से प्राप्त होती रहेगी।

पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,
मनीष टंडन
उप महाप्रबंधक

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
ISO 9001: 2008

सं. वाप/चेन्नई/हिन्दी/2017 दिनांक: 14.10.2017

सेवा में,

श्रीमती [illegible] भट्ट
प्रमुख (रा. भा. का.)
वाप्कोस लिमिटेड
76-C, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
सेक्टर 18, गुड़गांव-122 015

विषय: गृह पत्रिका 'वाप्कोस' अंक-85 अप्रैल-जून 2017 के प्रकाशन के संबंध में।

महोदया,

आपके द्वारा भिजवाई गयी राजभाषा को समर्पित वाप्कोस की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' अंक-85 हमें प्राप्त हो गई है। हम आपको बताना चाहते हैं की इस पत्रिका का यह अंक बहुत अच्छा लगा। यह पत्रिका हमारे प्रदेश को राजभाषा के करीब लाती है। इस पत्रिका की एक प्रति हमने नराकास कार्यालय में भिजवा दी है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार की गरिमा को बढ़ाने के लिए आपको हमारा सहयोग और प्रोत्साहन हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद।

भवदीया,
(डी.बी.एस. मूर्ति)
क्षेत्रीय प्रबंधक (दक्षिण)

No.990, 50th Street, TVS Colony, Anna Nagar West Extension, Chennai-600 101
Telephone: 044-26540477, Fax: 044-26541376, Email: chennai@wapcos.co.in

श्री नितिन गड़करी, माननीय मंत्री (सड़क परिवहन व राजमार्ग, नौपरिवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण), श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्य मंत्री और डॉ. सत्यपाल सिंह, माननीय राज्य मंत्री और डॉ. अमरजीत सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की उपस्थिति में वर्ष 2016-17 हेतु 42.13 करोड़ रूपये का लाभांश (लाभांश कर सहित) श्री आर.के. गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस से प्राप्त करते हुए।

श्री नितिन गड़करी, माननीय मंत्री (सड़क परिवहन व राजमार्ग, नौपरिवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण), श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्य मंत्री और डॉ. सत्यपाल सिंह, माननीय राज्य मंत्री और डॉ. अमरजीत सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की उपस्थिति में 30 करोड़ रूपये का बोनस शेयर श्री आर.के. गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस से प्राप्त करते हुए।

जम और जमाई

काका हाथरसी

(जन्म 8 सितम्बर 1906 -
निधन 18 सितम्बर, 1995)

बड़ा भयंकर जीव है, इस जग में दामाद
सास-ससुर को चूस कर, कर देता बर्बाद
कर देता बर्बाद, आप कुछ पियो न खाओ
मेहनत करो, कमाओ, इसको देते जाओ
कहँ 'काका' कविराय, सासरे पहुँची लाली
भेजो प्रति त्यौहार, मिठाई भर-भर थाली

लल्ला हो इनके यहाँ, देना पड़े दहेज
लल्ली हो अपने यहाँ, तब भी कुछ तो भेज
तब भी कुछ तो भेज, हमारे चाचा मरते
रोने की एक्टिंग दिखा, कुछ लेकर टरते
'काका' स्वर्ग प्रयाण करे, बिटिया की सासू
चलो दक्षिणा देउ और टपकाओ आँसू

जीवन भर देते रहो, भरे न इनका पेट
जब मिल जायें कुँवर जी, तभी करो कुछ भेंट
तभी करो कुछ भेंट, जँवाई घर हो शादी
भेजो लड्डू, कपड़े, बर्तन, सोना-चांदी
कहँ 'काका', हो अपने यहाँ विवाह किसी का
तब भी इनको देउ, करो मस्तक पर टीका

कितना भी दे दीजिये, तृप्त न हो यह शख्स
तो फिर यह दामाद है अथवा लैटर बक्स ?
अथवा लैटर बक्स, मुसीबत गले लगा ली
नित्य डालते रहो, किंतु खाली का खाली
कहँ 'काका' कवि, ससुर नर्क में सीधा जाता
मृत्यु - समय यदि दर्शन दे जाये जमाता

और अंत में तथ्य यह कैसे जायें भूल
आया हिंदू कोड बिल, इनके ही अनुकूल
इनके ही अनुकूल, मार कानूनी घिस्सा
छीन पिता की संपत्ति से, पुत्री का हिस्सा
'काका' एक समान लगें, जम और जमाई
फिर भी इनसे बचने की कुछ युक्ति न पाई

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय
पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in